कुरआन मजीद

अन्तिम ईशग्रन्थ

डा० इल्तिफ़ात अहमद इस्लाही
एम०एस०सी०, बी०टी०(अलीग०)

क़ुरआन मजीद

अन्तिम ईशग्रन्थ

डॉ० इल्तिफ़ात अहमद इस्लाही
एम.एस.सी., बी.टी. (अलीग.)

मधुर सन्देश संगम
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25

दो शब्द

आज जहाँ नित नए आविष्कार किए जा रहे हैं, तरह-तरह की खोज की जा रही है और संसार विज्ञान के माध्यम से उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा है, वहीं मानव की समस्याएँ ज्यों की त्यों हैं। बल्कि मनुष्य दिन-प्रतिदिन समस्याओं में उलझता जा रहा है, धर्म के नाम पर अंधविश्वास और आडम्बरों के चक्रव्यूह में फँसा हुआ है, राजनीति के नाम पर हर प्रकार से शोषण किया जा रहा है, आर्थिक ढाँचा असमानता का शिकार है। सुख-शान्ति ख़त्म हो चुकी है। हिंसा, आतंकवाद, फॉसीवाद, भीषण घोटाले, धन-प्राप्ति के लिए खाद्य पदार्थों में प्राण-घातक तत्त्वों की मिलावट, नशीले पदार्थों का सेवन, औरतों पर अत्याचार, अश्लीलता, यौन-शोषण, बाल-शोषण, देश, रंग, नस्ल और भाषा के नाम पर परस्पर घृणा और पृथक होने की प्रवृत्ति, परमाणु युद्ध का ख़तरा, चोरबाज़ारी, जमाख़ोरी आदि असंख्य समस्याएँ हैं जो मानव और मानव-समाज में ख़ून की तरह रच-बस गई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जो प्रयत्न किए गए या किए जा रहे हैं, उनसे ये समस्याएँ हल होने के बजाए और जटिल होती जा रही हैं और स्थिति वास्तव में यह हो गई है कि 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की!'

मानव की इन समस्याओं का एकमात्र समाधान ईश्वर और ईश्वर द्वारा दिखाया गया मार्ग है। ईश्वर ने जहाँ हमें प्रकृति का अनमोल ख़ज़ाना दिया है, शारीरिक शक्तियों का भंडार, बुद्धि-विवेक और अनगिनत नेमतें प्रदान की हैं वहीं हमें मार्गदर्शन भी दिया है। एक ऐसा मार्गदर्शन जिसपर चलकर सुखमय जीवन की कल्पना की जा सकती है।

ईश्वर ने अपने अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के माध्यम से एक ग्रन्थ भेजा, जिसका नाम 'कुरआन' है जो मानव को सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए आया है। वास्तव में हमारी सारी समस्याओं का हल कुरआन ही के पास है।

प्रस्तुत पुस्तक में ईश्वर के ग्रन्थ 'कुरआन' के सम्बन्ध में इस सत्य को

प्रमाणित करने का एक प्रयास किया गया है कि यह एक ईश्वरीय ग्रन्थ है, न कि मानव रचित। इसके विषय में कुछ वैज्ञानिक सबूत भी एकत्रित किए गए हैं। आशा है प्रस्तुत पुस्तक भटकती मानव जाति के लिए एक सहारा सिद्ध होगी।

आशा की जाती है कि प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन के पश्चात् कुरआन का अध्ययन न केवल अपनी समस्याओं के निदान की दृष्टि से बल्कि समस्त मानव-जगत की समस्याओं के निदान की दृष्टि से किया जाएगा और इस बात के लिए प्रयास किया जाएगा कि संसार को तबाही से बचाने के लिए इस महान ग्रन्थ की शिक्षाओं को व्यावहारिक रूप दिया जाए। हमारे प्रकाशन ने ऐसी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनके द्वारा आप ईश्वरीय आदेशों को आसानी से समझ सकते हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें सत्य को समझने और उसपर चलने की सामर्थ्य प्रदान करे।

— प्रकाशक

विषय सूची

- मानव का पहला जोड़ा 7
- अन्तिम ईशदूत से पूर्व संसार की दशा 9
- पूर्ण अज्ञान 11
- अनेकेश्वरवादजनित अज्ञान (शिर्क) 14
- मानव-निर्मित जीवन-सिद्धान्त 15
- अन्तिम ईशग्रन्थ का वैज्ञानिक सबूत 20
- मानव-ज्ञान और ईश-ज्ञान 30
- अन्तिम ईशग्रन्थ ने दुनिया को क्या दिया? 31
- ईश्वर 33
- नरक 38
- स्वर्ग 39
- हाकमियत 40
- इबादत (उपासनाएँ) 45

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

मानव का पहला जोड़ा

आज संसार यह मान रहा है कि इस ब्रह्माण्ड का बनानेवाला एक है। कोई उसको ईश्वर कहता है तो कोई अल्लाह, कोई उसको गॉड (God) कहता है तो कोई ख़ुदा। ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि के एक छोटे से भाग में ज़मीन बनाई और उसमें मानव का एक जोड़ा भेजा। कोई उसको एडम और ईव और कोई इसी जोड़े को आदम और हव्वा के नाम से जानता है। कोई इस जोड़े को अन्य किसी नाम से याद करता है। ईश्वर ने इस जोड़े को सुन्दर शरीर, अच्छी योग्यताएँ और अच्छे बुरे का ज्ञान देकर आबाद किया। उसकी आवश्यकता की सारी चीज़ें बड़ी मात्रा में यहाँ लाकर जमा कर दीं। उसको एक मस्तिष्क और उसकी सहायता के लिए पाँच इंद्रियाँ दीं, ताकि वह ईश्वर की दी हुई वस्तुओं का पता लगाए और उनसे लाभ उठाए। अतः वह प्रतिदिन किसी न किसी वस्तु का पता लगाता है और उससे लाभ उठाता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज उसकी आवश्यकता है। यदि समाज संगठित न हो तो वह आपस ही में कट मरे और ईश्वर की दी हुई सारी वस्तुएँ धरी की धरी रह जाएँ। इसलिए ईश्वर ने उसको एक दीन (धर्म) और आईन (Constitution) दिया, ताकि वह शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।

जब मानव ने ईश्वर के दिए हुए दीन और आईन के आधार पर जीवन आरम्भ किया तो वह बड़ा सफल हुआ, अच्छे व्यक्ति बने, अच्छा समाज बना, एक दूसरे के प्रति प्रेम पैदा हुआ। समाज में न ऊँच-नीच थी, न कोई छुआछूत। सब लोग प्रेम भरा जीवन मिलजुल कर व्यतीत कर रहे थे। परन्तु कुछ दुष्ट लोगों को यह बात पसन्द न आई। वे तो चाहते थे कि देश की सारी सत्ता उनके हाथों में हो। देश के अन्य लोग उनके आगे सिर झुकाए खड़े रहें। देश के सारे साधन पर उनका क़ब्ज़ा हो और अन्य लोग उनके आगे हाथ फ़ैलाए खड़े रहें। परन्तु ईश्वरीय दीन और आईन के होते हुए यह बात सम्भव न थी। इसलिए इन दुष्टों ने ईश्वर के भेजे हुए दीन और आईन में परिवर्तन और घटाना-बढ़ाना प्रारम्भ किया। उसमें इतना बिगाड़ पैदा कर दिया कि उसमें समाज को संगठित करने की

क्षमता ही समाप्त हो गई। कोई समाज दीन के बिना एक दिन भी शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। अतः व्यक्ति बिगड़ा, समाज बिगड़ा और समाज में ऊँच-नीच और छुआछूत पैदा हुई। समाज वर्गों में विभाजित हुआ। एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करने लगा। हर तरफ़ लूट-खसोट और मार-काट आरम्भ हो गई। ईश्वर को मानव की इस दुर्दशा पर दया आई। उसने किसी दूसरे ईशदूत द्वारा वही दीन और आईन पुनः भेजा। उसने मानव निर्मित दीन और आईन को समाप्त किया। उस स्थान पर ईश्वर का भेजा हुआ दीन और आईन स्थापित किया। इस प्रकार ईश्वर-निर्मित और मानव-निर्मित जीवन-सिद्धान्त में संघर्ष चलता रहा। कभी इसको सफलता मिली, कभी उसको सफलता मिली। इस प्रकार यह संघर्ष बराबर जारी रहा।

ईश्वर की योजना तो यह थी कि एक ईश्वर, एक ईशदूत और एक ईशग्रन्थ द्वारा सारे मानव-जगत को एक प्लेटफार्म पर एकत्र कर दिया जाए ताकि रोज़-रोज़ की उखाड़-पछाड़ समाप्त हो जाए। परन्तु उस समय यह सम्भव नहीं था। मानव अपनी प्रारम्भिक उन्नति पर चल रहा था। यातायात की बहुत सी कठिनाइयों पर उसे कंन्ट्रोल प्राप्त नहीं हुआ था। दो देशों के बीच में कहीं समुद्र था तो कहीं मरुस्थल। कहीं जंगल था तो कहीं पहाड़। उस समय के मनुष्य में इन कठिनाइयों को दूर करने की क्षमता नहीं थी। समाज के लिए दीन और आईन एक आवश्यकता है। इसके बिना कोई सभ्य समाज एक दिन भी जीवित नहीं रह सकता। अतः ईश्वर ने अपना दीन और आईन अपने ईशदूत द्वारा हर क़ौम और हर मुल्क में भेजा, जिसने उस मुल्क की भाषा में जीवन-सिद्धान्त को प्रस्तुत किया।

अन्तिम ईशदूत से पूर्व संसार की दशा

जब मानव ने कुछ उन्नति कर ली और यातायात के साधनों पर किसी हद तक कंट्रोल कर लिया तो ईश्वर ने अपनी योजना के अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)[1] को पूरे मानव-जगत के लिए अपना अन्तिम ईशदूत बनाकर भेजा और आप (सल्ल०) के द्वारा अंतिम ईशग्रन्थ कुरआन मजीद भेजा। अब न कोई ईशदूत आनेवाला है और न कोई कोई ईशग्रन्थ। अतः ईश्वर ने अपने अन्तिम ईशग्रन्थ (कुरआन) की रक्षा की ज़िम्मेदारी खुद ही ले ली है और वह आज तक सुरक्षित है।

जिस समय ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पूरे मानव-जगत का अन्तिम ईशदूत बनाकर और उनके साथ अपना अन्तिम ईशग्रन्थ (कुरआन मजीद) देकर दुनिया में भेजा, उस समय दुनिया का बड़ा बुरा हाल था। अब तक के आए हुए ईशग्रन्थ उलट-फेर और अर्थ-विकृति का शिकार होकर बेकार हो चुके थे। ईशदूतों की जीवनी क़िस्से और कहानियों में गुम हो चुकी थी। सैकड़ों वर्ष से कोई ईशदूत भी नहीं आया था। पूरा मानव-जगत अन्धकार में भटक रहा था। मूर्त्तिपूजा पूरी दुनिया में हो रही थी, क्योंकि जनता के शोषण का यही सरल साधन था। समाज वर्गों में विभाजित था और एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण कर रहा था। मिस्र के लोग सूरज को अपना सबसे बड़ा देवता मानते थे। मिस्र के एक चालाक आदमी ने घोषणा की कि जिस सूर्य को तुम अपना सबसे बड़ा देवता मानते हो मैं उसी की औलाद हूँ, अतः मैं फ़िरऔन (सूर्य की औलाद) हूँ। मिस्र की जनता ने उसको सूर्य की औलाद मान लिया और मिस्र में उसकी ताक़तवर हुकूमत बन गई, क्योंकि कोई समाज अपने देवता का विद्रोही नहीं हो सकता। यह देखकर जापान के एक चालाक आदमी ने भी घोषणा की कि मैं मीकाडो हूँ, अर्थात सूर्य देवता की औलाद हूँ। जापान के लोग भी सूर्य को अपना सबसे बड़ा देवता मानते थे। इस प्रकार जापान में उसकी मज़बूत हुकूमत बन गई। इसी प्रकार हिन्दुस्तान में चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी राजाओं ने चाँद और सूर्य से नाता जोड़कर अपनी हुकूमत को मज़बूत बनाया। इसी प्रकार पूरी दुनिया में मानव-जगत का शोषण हो रहा था।

मानव-जगत की यह दुर्दशा देखकर बुद्धिमान और सज्जन लोग मानव को इस दुर्दशा से निकालना चाहते थे। परन्तु वे जानते थे कि जब भी कोई जीवन-सिद्धान्त बनाया जाएगा तो उसकी शुरुआत तत्तवमीमांसा (Metophysics) से ही होगी। अर्थात् यह ब्रह्माण्ड

---

1. सल्ल० : इसका पूर्ण रूप है 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' अर्थात उनपर ईश्वर की दया और कृपा हो। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम लिखते या लेते समय दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।

क्या है, कैसे बना, और कैसे चल रहा है, मानव कहाँ से आ गया, इसका ब्रह्माण्ड से क्या सम्बन्ध है?

दुनिया में एक प्रकार की चीज़ें तो वे हैं जिनका अनुभव हम अपनी इंद्रियों द्वारा कर सकते हैं या अपने वैज्ञानिक यन्त्रों (Scientific Instruments) से काम लेकर उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इन ज्ञानों से अपनी सोच द्वारा नये-नये फारमूले बना सकते हैं। इसी लिए इस प्रकार की चीज़ों का ज्ञान ईश्वर की ओर से आने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह क्षेत्र हमारे सोच-विचार ही का क्षेत्र है।

दूसरे क़िस्म की चीज़ें वे हैं जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों और वैज्ञानिक यन्त्रों की पहुँच से आगे हैं, जिन्हें न हम तौल सकते हैं और न नाप सकते हैं, न अपने ज्ञान द्वारा वह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जिसको ज्ञान (Knowledge) कहा जा सके।

यही वह क्षेत्र है जिसमें मानव ईश्वर के दिए हुए ज्ञान का मुहताज है और ईश्वर ने यह ज्ञान इस प्रकार नहीं दिया है कि कोई किताब छाप कर एक-एक व्यक्ति के हाथ में दे दी हो, और उससे कह दिया हो कि स्वयं पढ़कर जान ले कि ब्रह्माण्ड और ख़ुद तेरी वास्तविकता क्या है? इस सत्य के अनुसार इस दुनिया के जीवन में तेरा रवैया क्या होना चाहिए? इस ज्ञान को मानव तक पहुँचाने के लिए उसने सदैव ईशदूतों को माध्यम बनाया है। 'वह्य' (प्रकाशना) के द्वारा उनको सत्य की जानकारी दी है और उन्हें इस काम पर नियुक्त किया है कि वे इस ज्ञान को लोगों तक पहुँचा दें।

तत्कालीन विचारक, दार्शनिक और समाज-सुधारक मानव की इस दुर्दशा से बड़े दुखी थे। वे मानव को इस संकट से एक अच्छे जीवन-सिद्धान्त द्वारा निकालना चाहते थे। वे यह भी जानते थे कि मानव के लिए जीवन-सिद्धान्त केवल तीन प्रकार के हो सकते हैं।

1. मानव की ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त हो उसी के आधार पर जीवन-सिद्धान्त बना दिया जाए। इसको पूर्ण अज्ञान भी कहा जाता है।

2. मानव की ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान के साथ-साथ कुछ अपनी ओर से भी अनुमान और अनुभव के द्वारा प्राप्त ज्ञान सम्मिलित कर लिया जाए। इसको अनेकेश्वरवादीय अज्ञान भी कहा जाता है।

3. ईश्वर स्वयं अपने ईशग्रन्थ द्वारा जीवन-सिद्धान्त भेज दे। यह तीसरी शक्ल उस समय सम्भव नहीं थी। क्योंकि ईश्वर की ओर से उस वक़्त तक जितने ईशग्रन्थ आए थे वे सब परिवर्तन का शिकार होकर बेकार हो चुके थे। सैकड़ों वर्ष से कोई ईशग्रन्थ भी नहीं आया था। अतः अब उसके पास केवल दो ही साधन रह गए थे। पूर्ण अज्ञान और अनेकेश्वरवादीय अज्ञान। अब देखना यह है कि यह है क्या?

पूर्ण अज्ञान

जब मानव अपनी ज्ञानेन्द्रियों के सहारे समस्याओं का समाधान करने बैठता है तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यह सारा ब्रह्माण्ड इत्तिफ़ाक़ या संयोग से पैदा हो गया है और उसके पीछे कोई मक़सद नहीं है। यह यूँ ही बन गया है, यूँ ही चल रहा है और यूँ ही एक दिन बिना किसी परिणाम के समाप्त भी हो जाएगा। इसका कोई मालिक दिखाई नहीं देता। अतः या तो वह है ही नहीं या अगर वह है भी तो उसको मानव-जीवन से कोई लगाव नहीं है। मानव एक प्रकार का जानवर है, जो शायद इत्तिफ़ाक़ या संयोग से पैदा हो गया है। कुछ नहीं पता कि इसको किसी ने पैदा किया है या स्वयं पैदा हो गया है। बहरहाल, यह प्रश्न निराधार है। वह इस ज़मीन पर पाया जाता है, कुछ इच्छाएँ रखता है, जिन्हें पूरा करने के लिए उसके अन्दर से तबीयत ज़ोर मारती है। कुछ शक्तियाँ और कुछ यन्त्र भी रखता है जो उसकी इच्छाओं की पूर्ति के साधन बन सकते हैं। उसके सामने पृथ्वी पर बेहिसाब सामान फ़ैला हुआ है, जिस पर यह अपनी शक्ति और अपने यंत्रों की सहायता से अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अतः उसकी शक्तियों का परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वह अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को ज़्यादा से ज़्यादा पूरा कर दे। और दुनिया की हैसियत इसके सिवा कुछ नहीं कि यह इच्छाओं की पूर्ति का एक मैदान है जो इसलिए पैदा किया गया है कि मानव इस पर हाथ मारे। ऊपर कोई आदेश देनेवाला नहीं है जिसके सम्मुख वह उत्तरदायी हो। कोई ज्ञान-भंडार और आदेश का ख़ज़ाना नहीं है जहाँ से मानव को अपने जीवन का कानून मिल सकता हो। अतः मानव इस पृथ्वी पर स्वतंत्र है। यह किसी के सामने उत्तरदायी भी नहीं है। अगर उत्तरदायी है भी तो अपनी ही बनाई हुई सत्ता के सामने। जीवन जो कुछ है यही सांसारिक जीवन है। हमारे कामों का परिणाम हमारे जीवन तक ही सीमित है। अतः किसी वस्तु के सही या ग़लत, लाभदायक या हानिकारक होने के योग्य या त्याज्य का निर्णय केवल उन परिणामों के आधार पर किया जाएगा जो इसी संसार में होते हैं।

यह एक पूर्ण जीवन-सिद्धान्त है जिसमें जीवन की मूल समस्याओं का समाधान अनुभव पर किया गया है। व्यक्तिगत जीवन में इस दृष्टिकोण का परिणाम यह है कि मानव आदि से अन्त तक स्वतंत्र और ग़ैरज़िम्मेदाराना रवैया स्वीकार करे। वह अपने आप को अपने शरीर और अपनी शारीरिक शक्तियों का मालिक समझेगा और इसी लिए अपनी इच्छानुसार जिस तरह चाहेगा उनका प्रयोग करेगा। संसार की जो वस्तुएँ उसके क़ब्ज़े में

आएँगी और जिन आदमियों पर उसको सत्ता प्राप्त होगी उन सब पर उसका प्रभाव ऐसा होगा जैसे वह उनका मालिक है। उसके अधिकारों को सीमित करनेवाली वस्तुओं पर केवल प्राकृतिक हदें और सामूहिक जीवन की बंदिशें होंगी। स्वयं उसको अपनी आत्मा में ऐसा नैतिक विचार और ज़िम्मेदारी का ख़्याल और किसी पूछताछ का डर न होगा तो उसको बेनकेल का ऊँट बनने से कोई चीज़ रोक नहीं सकती। जहाँ ऊपरी दबाव न हो और जहाँ वह रुकावटों के विपरीत काम करने की शक्ति अपने अन्दर पाता हो उसको अत्याचारी, विश्वासघाती, दुष्ट, फ़सादी बनने से कोई चीज़ रोक नहीं सकती। वह स्वभावतः स्वार्थी, भौतिकवादी और अवसरवादी होगा। उसका जीवन-लक्ष्य नफ़सानी ख़्वाहिशात और हैवानी ज़रूरियात के अतिरिक्त कुछ न होगा। उसकी दृष्टि में केवल उन वस्तुओं का महत्व और मूल्य होगा जिनकी आवश्यकता उसे अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हो। व्यक्तियों में इस चरित्र और व्यवहार का उत्पन्न होना इस विश्वास का प्राकृतिक और तर्क-सम्मत परिणाम है। सम्भव है ऐसा व्यक्ति दूरअंदेशी और मसलिहत के कारण देशभक्त, त्यागी और अपनी जाति के लिए जान तोड़ कोशिश करता हो। संक्षेप में, वह अपने जीवन में ज़िम्मेदाराना अख़लाक़ का उदाहरण पेश करे। यदि उसके इस रवैये का विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होगा कि यह सब उसके स्वार्थ ही का परिणाम है। यही कारण है कि ऐसा व्यक्ति ज़्यादा से ज़्यादा एक नेशनलिस्ट ही हो सकता है। फिर जो समाज ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों से बनेगा, उसकी प्रमुख विशेषताएँ ये होंगी—

● राजनीति का आधार मानव-हाकिमियत पर होगा। भले ही वह एक व्यक्ति, ख़ानदान या एक वर्ग का हाकिम हो। जनता की हाकिमियत की भी ऊँची से ऊँची कल्पना बस राष्ट्रमंडल (Common wealth) की होगी। इस राष्ट्रमंडल में क़ानून बनानेवाले मानव होंगे। समस्त विधियों का निर्माण और परिवर्तन इच्छा और नीति के आधार पर होगा। और स्वार्थपरता और अवसरवादिता के आधार पर पॉलिसियाँ बनाई और बदली जाएँगी। राज्य की सीमा में वे लोग ज़ोर करके ऊपर आएँगे जो सबसे ज़्यादा ताक़तवर, चालाक, छली-कपटी, झूठे, दग़ाबाज़, कठोर हृदय होंगे। समाज का मार्गदर्शन और शासन उन्हीं के हाथ में होगा और उनके विधान में ताक़त का नाम सत्य और कमज़ोरी का नाम असत्य होगा।

● तमद्दुन व मआशरत (सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन) की पूरी व्यवस्था भोग-विलासिता पर क़ायम होगी। इन्द्रिय सुख प्राप्ति की इच्छा मनुष्य को नैतिकता की सीमा से बाहर करती चली जाएगी और समस्त नैतिक मानदंड इस प्रकार क़ायम किए जाएँगे

कि उनके कारण विषयों के उपभोग में बाधा कम से कम पड़े।

- कला और साहित्य भी इसी मनोवृत्ति से प्रभावित होंगे, और उनमें अश्लीलता और वासना के तत्वों की वृद्धि होती चली जाएगी।

- आर्थिक जीवन में कभी जागीरदारी का बोलबाला होगा, कभी पूँजीवादी व्यवस्था उसका स्थान लेगी और कभी मज़दूर अपना आतंक स्थापित करके अपनी डिक्टेटरशिप क़ायम कर लेंगे। आर्थिक व्यवस्था का सम्बन्ध सत्य के साथ कदापि न हो सकेगा, क्योंकि संसार और उसकी सम्पत्ति के विषय में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी रवैया इस विचार पर निर्भर होगा कि यह स्वादिष्ट व्यंजनों से परिपूर्ण एक थाली है, जिस पर वह अपनी रुचि के अनुसार और अवसर के अनुरूप हाथ मारने के लिए स्वतंत्र है।

- फिर इस समाज में व्यक्तियों के निर्माण के लिए शिक्षा-दीक्षा की जो व्यवस्था होगी उसकी प्रकृति भी इसी जीवन-दर्शन और नीति के अनुरूप होगी। इसमें आनेवाली प्रत्येक नई पीढ़ी को संसार और मनुष्य तथा संसार में मनुष्य के स्थान के विषय में वही धारणा प्रदान की जाएगी जिसकी व्याख्या ऊपर की गई है। समस्त ज्ञान, चाहे वह विद्या के किसी भी अंग से सम्बद्ध हो, उन्हें ऐसी ही पद्धति से दिया जाएगा कि स्वतः उनके मन में जीवन सम्बन्धी यही विचार फिर उत्पन्न हो जाए और फिर समस्त व्यवस्था इस प्रकार की होगी कि वे जीवन में इसी पद्धति का अवलम्बन करने और इसी के अनुसार समाज में खप जाने के लिए तैयार हो। इस शिक्षा-दीक्षा की विशेषताओं के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आज लोगों को इसका व्यक्तिगत अनुभव है। जिन शिक्षण संस्थाओं में आज लोग शिक्षा पा रहे हैं, उनकी स्थापना इसी दृष्टिकोण के अनुरूप हुई है। यद्यपि उनके नाम किसी धर्म या सम्प्रदाय के आधार पर हैं।

यह व्यवहार, जिसकी व्याख्या ऊपर की गई है, पूरी तरह अज्ञान पर आधारित है। जिसकी मिसाल वही है जो उस बच्चे की मिसाल है जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर आग को खिलौना समझा। फ़र्क़ केवल इतना है कि अनुभव की ग़लती फ़ौरन ज़ाहिर हो जाती है, क्योंकि जिस आग को खिलौना समझकर वह हाथ मारता है वह गर्म आग होती है और हाथ लगाते ही फ़ौरन बता देती है कि मैं खिलौना नहीं हूँ। इसके विपरीत यहाँ भ्रम की ग़लती देर में ज़ाहिर होती है, बल्कि बहुतों पर खुलती ही नहीं। क्योंकि जिस आग पर वह हाथ मारता है उसकी आँच धीमी है। फ़ौरन ही नहीं जला देती, शताब्दियों तक तपाती रहती है। फिर भी यदि कोई व्यक्ति अनुभवों से शिक्षा लेने पर तैयार हो तो रात-दिन के जीवन में इस दृष्टिकोण के कारण व्यक्तियों की बेईमानियों, शासकों के अत्याचारों, मुन्सिफ़ों की नाइन्साफ़ियों और मालदारों की ख़ुदगर्ज़ियों और जनसाधारण के

दुराचारों का जो कटु अनुभव उसको होता है और बड़े पैमाने पर इसी दृष्टिकोण के कारण जातिवाद, साम्राज्यवाद, युद्ध, दंगे, एक देश द्वारा दूसरे देश पर क़ब्ज़ा करने और जनसंहार की जो ज्वालाएँ निकलती हैं उनकी चिंगारियों से वह इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि यह अज्ञान का रवैया है, ज्ञान का रवैया नहीं है। कारण यह है कि मानव ने अपने और ब्रह्माण्ड के विषय में जो राय क़ायम करके यह रवैया अपनाया है वह वास्तविकता के अनुरूप नहीं है, अन्यथा उससे यह बुरे परिणाम न निकलते।

अनेकेश्वरवादजनित अज्ञान (शिर्क)

इस धारणा के अनुसार कि यह ब्रह्माण्ड बिना ईश्वर के नहीं है, मगर उसका एक ईश्वर नहीं है, बल्कि बहुत-से ईश्वर हैं। डिपार्टमेंट बँटे हुए हैं। हर डिपार्टमेंट का मालिक अलग-अलग ईश्वर है। मानव का सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य, सफलता और असफलता, लाभ और हानि इन ख़ुदाओं की प्रसन्नता और अप्रसन्नता पर निर्भर है। यह राय जिन लोगों ने क़ायम की है उन्होंने फिर अनुमान द्वारा पता लगाने का प्रयत्न किया है कि ये शक्तियाँ किनमें और कहाँ-कहाँ हैं। जिन-जिन चीज़ों पर उनकी निगाह ठहरी, उन्हीं को ख़ुदा मान लिया। इस तरह मानव संदेहों का एक जंगल बन गया और वह बिना किसी इल्मी सुबूत के बहुत-सी चीज़ों के विषय में यह राय बना लेता है कि वे सुपर-नेचुरल तरीक़े से उसकी क़िस्मत पर अच्छा या बुरा असर डालती हैं। इसलिए वह अच्छे परिणाम की उम्मीद और बुरे परिणाम के डर से अपनी बहुत-सी शक्तियों को नष्ट कर देता है। कहीं किसी क़ब्र से आशा लगाता है कि यह मेरा काम कर देगी, कहीं किसी मूर्ति पर भरोसा करता है कि वह मेरी क़िस्मत बना देगी, कहीं और किसी काल्पनिक सत्ता को प्रसन्न करने के लिए दौड़ता फिरता है। कहीं अच्छे शगुन से आशाएँ करके काल्पनिक स्वर्ग का निर्माण करता है, कहीं बुरे शगुन से हतोत्साहित हो जाता है। ये सारी चीज़ें उसके विचारों और उपायों को प्राकृतिक मार्ग से हटाकर अप्राकृतिक मार्ग पर डाल देती हैं। इस राय के आधार पर पूजा-पाठ, नज़्र व नियाज़ और अन्य रस्मों की क्रिया-विधि बनती है, जिसके कारण मनुष्य के प्रयत्नों का एक बड़ा भाग बेनतीजा कामों में नष्ट हो जाता है। तीसरी बात यह है कि इन अनेकेश्वरवादी मूर्खताओं में फाँस लेने का अवसर चालाक लोगों को भलीभाँति मिल जाता है। कोई राजा बन बैठता है और सूर्य, चन्द्रमा अथवा अन्य देवताओं से अपनी वंश परम्परा सिद्ध करके लोगों को विश्वास दिलाता है कि हम भी स्वामियों अथवा ईश्वरों में से हैं और तुम हमारे सेवक हो। कोई पुरोहित या मुजाविर

बन बैठता है और कहता है कि तुम्हारे हानि-लाभ का सम्बन्ध जिनसे है, उनसे हमारा सम्पर्क है और तुम हमारे द्वारा ही उन तक पहुँच सकते हो। कोई पंडित और पीर बन जाता है और तावीज़-गंडों, मन्त्रों और अमलियात का ढोंग रचकर लोगों को विश्वास दिलाता है कि हमारी ये वस्तुएँ सुपर-नेचुरल प्रकार से तुम्हारी आवश्यकताएँ पूरी करेंगी। फिर इन चालाक लोगों की पीढ़ियाँ स्थायी परिवारों और वर्गों में परिवर्तित हो जाती हैं, जिनके अधिकार समयानुसार बढ़ते रहते हैं। इस तरह इस विश्वास के कारण सारे व्यक्तियों की गर्दन पर शाही ख़ानदानों, मज़हबी ओहदेदारों और रूहानी पेशवाओं की ख़ुदाई का जुआ रखा जाता है। और ये बनावटी ख़ुदा इनको इस तरह अपना ख़ादिम बनाते हैं कि मानो वे दूध देने और सवारी या बोझ ढोनेवाले पशु हैं।

मानव-निर्मित जीवन-सिद्धान्त

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दुनिया में अन्तिम ईशदूत के रूप में आने से पहले दुनिया का बड़ा बुरा हाल था। अब तक जितने ईशग्रन्थ आ चुके थे वे सबके सब परिवर्तन का शिकार होकर बेकार हो चुके थे। सैकड़ों वर्ष से कोई ईशदूत भी नहीं आया। अतः पूरी दुनिया में अराजकता ही अराजकता थी। मानव का हर स्तर पर शोषण हो रहा था। दुनिया के विचारक, समाज-सुधारक, दार्शनिक और सूफ़ी-सन्त, ऋषि-मुनि मानव की इस दुर्दशा से बड़े दुखी थे। वे मानव को इस संकट से निकालकर सुन्दर, सुगम और सुखदायी जीवन-सिद्धान्त में संगठित कर देना चाहते थे। परन्तु वे जानते थे कि मानव के लिए जीवन-सिद्धान्त केवल तीन ही प्रकार के हो सकते हैं— 1. पूर्ण अज्ञान 2. अनेकेश्वरवादजनित अज्ञान 3. ईश्वर का भेजा हुआ ईशग्रन्थ। इस तीसरे रूप का प्रचलन नहीं था। क्योंकि ईश्वर की ओर से अब तक भेजे हुए ईशग्रन्थ परिवर्तन का शिकार होकर बेकार हो चुके थे। अब ले देकर केवल दो ही शक्लें उनके सामने थीं— पूर्ण अज्ञान या अनेकेश्वरवादजनित अज्ञान। अतः इन्हीं के आधार पर मनुष्य ने अपने लिए जीवन-सिद्धान्त बनाया, परन्तु उनके सामने सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि जिस आधार पर यह जीवन-सिद्धान्त बनाया गया था उसके विषय में ये लोग यह नहीं कह सकते थे कि यह सत्य है या असत्य। उनके पास काई कसौटी नहीं थी जिस पर परख कर वे जान सकते कि यह सत्य पर आधारित है या असत्य पर। कसौटी तो केवल एक है, वह है ईशग्रन्थ, जिसमें कोई बात ग़लत नहीं होती और वह उनके पास नहीं था। इसलिए उन्होंने मानव के लिए जीवन-सिद्धान्त तो बना दिया, परन्तु वे स्वयं नहीं कह

सकते थे कि वह सत्य है। इस प्रकार इस जीवन-सिद्धान्त का आधार अंध-विश्वास पर था। इसके बाद इसमें बहुत से अंकुर फूटे और नए-नए जीवन सिद्धान्त बन गए। एक ने कहा कि मृत्यु के पश्चात कोई जीवन नहीं और इसी आधार पर एक जीवन-सिद्धान्त बना डाला। किसी ने कहा कि मृत्यु के पश्चात एक जीवन है और किसी ने कहा कि मृत्यु के पश्चात अनेक जीवन हैं (आवागमन), किसी ने कहा कि इस ब्रह्माण्ड का कोई ईश्वर नहीं, तो किसी ने कहा कि ईश्वर तो एक है, तो किसी ने कहा कि ईश्वर तो अनेक हैं। इस प्रकार हर एक आधार पर जीवन-सिद्धान्त बन गए और हर एक की बुनियाद अन्धविश्वास है। बेचारा मनुष्य अराजकता के दलदल से निकला था तो अन्धविश्वास के जीवन-सिद्धान्तों के जंगल में गुम हो गया। कहावत मशहूर है कि ताड़ से गिरा और ख़जूर पर अटका। यही वह समय था कि ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पूरे मानव-जगत के लिए अपना अन्तिम दूत बनाकर भेजा और उनके साथ कुरआन मजीद को अन्तिम ईशग्रन्थ के रूप में भेजा।

अन्धविश्वास पर आधारित जीवन-सिद्धान्त पर चलनेवालों को सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि अगर वे कुरआन मजीद को ईशग्रन्थ मान लेते हैं तो अन्धविश्वास पर बना हुआ उनका अपना जीवन-सिद्धान्त निरस्त हो जाता है। जिस जीवन सिद्धान्त को वह सैकड़ों वर्ष से दाँत से पकड़े हुए थे, उसको छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, तो उन्होंने कह दिया कि कुरआन मजीद ईशग्रन्थ नहीं है। परन्तु इस पर यह प्रश्न उठा कि अगर यह ईशग्रन्थ नहीं है तो किसका ग्रन्थ है? किसी ने कहा कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) रात को कुछ वाक्य बनाते हैं और सुबह लोगों को यह कहकर सुनाते हैं कि ईश्वर की ओर से आया है। परन्तु यह बात कुछ लगती हुई न थी। क्योंकि सब जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पढ़े-लिखे नहीं थे। दूसरे ने कहा कि कोई व्यक्ति रात को आता है आप (सल्ल०) को कुछ वाक्य बनाकर दे जाता है और दूसरे दिन आप (सल्ल०) लोगों को यही सुनाते हैं और कहते हैं कि यह ईश्वर की ओर से आया है। परन्तु यह बात भी लगती हुई न थी, क्योंकि अरब में न कोई स्कूल था, न कॉलेज, न यूनिवर्सिटी और न कोई लाइब्रेरी। तो ऐसा योग्य आदमी कैसे तैयार हो गया और अगर तैयार हो भी गया तो अब तक कहाँ छुपा हुआ था। इस प्रकार कोई बात बनाए न बन रही थी, तो लोगों ने कहना आरम्भ किया कि यह तो पागलों की बड़ है, काहिनों की बेमतलब बकवास है। इस प्रकार कुरआन मजीद को लोगों ने ईशग्रन्थ मानने से इंकार कर दिया।

कुरआन मजीद इतने उच्चकोटि की वाणी है कि उसे जो सुनता लहालोट हो जाता। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कुरआन पढ़कर लोगों को सुनाते, जो पढ़े-लिखे और समझदार

थे वे इसपर ईमान लाते कि यह ईशग्रन्थ है। इस प्रकार कुरआन के माननेवालों की संख्या बढ़ने लगी और दुश्मनों की परेशानी बढ़ने लगी। जो इस पर ईमान लाता उसको मारा-पीटा जाता, किसी के पैर में रस्सी बाँधकर घसीटा जाता, किसी को जलती हुई रेत पर लिटाकर ऊपर से भारी पत्थर रख दिया जाता, किसी को उलटा लटकाकर नीचे से धूनी दी जाती। फिर भी ये ईमान लानेवाले पलटने को तैयार नहीं थे। जब लोगों ने देखा कि ईमान लानेवालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है तो तय किया गया कि मुहम्मद (सल्ल०) ही को क़त्ल कर दिया जाए। ईश्वर ने मुहम्मद (सल्ल०) को आदेश दिया कि रातों-रात मदीना चले जाओ, वहाँ के लोग अच्छे हैं और बहुत-से लोग इस किताब पर ईमान ला चुके हैं। अतः मुहम्मद (सल्ल०) मदीना हिजरत कर गए और जो मुसलमान जहाँ-जहाँ थे, धीरे-धीरे मदीना पहुँचने लगे। इस प्रकार कुरआन मज़ीद पर ईमान लानेवालों का एक गिरोह मदीना में बन गया। इस पर विरोधी बहुत चिन्तित हुए और इस छोटे-से गिरोह को ख़त्म करने के लिए उन्होंने कई बार आक्रमण किए, मगर हर बार पराजित हुए। इस प्रकार बद्र, उहद, हुनैन इत्यादि स्थानों पर युद्ध हुआ, पर हर जगह ईमान लानेवाले सफल रहे और अरब में इसी कुरआन के आधार पर एक छोटी-सी इस्लामी हुकूमत बन गई। वह अरब जहाँ कोई हुकूमत ही न थी, दिन-दहाड़े क़ाफ़िले लूट लिए जाते और बस्तियों के लोग रातभर डर के मारे सो भी नहीं पाते कि डाकुओं का कोई गिरोह रात को उनके घर पर आक्रमण करके लूट ले और मर्दों और औरतों को बाज़ार में ले जाकर बेच दे। यह थी अरब के लोगों की दुर्दशा। परन्तु जब इस्लामी स्टेट स्थापित हुई तो वहाँ ऐसा अमन हुआ कि एक बुढ़िया सोना उछालते हुए 'सनाआ' से 'हज़रे-मौत' तक सैकड़ों मील की तन्हा रेगिस्तानी यात्रा करती है। रास्ते में उसको कोई भय नहीं होता। यह दशा देखकर लोग बड़ी संख्या में ईमान लाने लगे और पूरे अरब में इस्लामी हुकूमत स्थापित हो गई।

मुहम्मद (सल्ल०) की मृत्यु के पश्चात उनके चार ख़ुलफ़ा 1. हज़रत अबूबक्र (रज़ि०), 2. हज़रत उमर (रज़ि०), 3. हज़रत उसमान (रज़ि०) और 4. हज़रत अली (रज़ि०) ने उस वक़्त की सभ्य दुनिया के बहुत बड़े क्षेत्र पर इस्लामी हुकूमत क़ायम कर दी। यह हुकूमत ईश्वर के बादशाह होने और इनसान का इस पृथ्वी पर ईश्वर का ख़लीफ़ा (नायब) होने के आधार पर बनी थी। पूरे देश में ईशग्रन्थ (कुरआन मजीद) के आधार पर क़ानून चलता था। पूरे देश में जनता बड़ी सुखी थी और हुकूमत से पूर्णतः संतुष्ट थी। ग़ैरमुसलिम लोग जो इस हुकूमत के अन्दर रहते थे, वे हुकूमत से बहुत ख़ुश थे। ईसाइयों के विषय में मिस्टर ऑरनॉल्ड का कथन काफ़ी है। वह कहते हैं—

''मुसलमानों की हुकूमत में जो ईसाई फ़िरक़े रहते थे उनके साथ न्याय करने में इस्लामी हुकूमत ने कभी कोताही नहीं की।''

अन्य ग़ैरमुसलिम वर्गों के बारे में केवल दो मिसालें प्रस्तुत की जाती हैं—

मिस्र के एक ग़ैरमुसलिम ने उस वक़्त के ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) से शिकायत की कि आपके गवर्नर के लड़के ने मेरे लड़के को नाहक़ कोड़े मारे हैं।

गवर्नर और उसका लड़का तलब किया गया। शिकायत सही साबित हुई। ख़लीफ़ा ने लड़के को हुक्म दिया कि तुम भी गवर्नर के लड़के को कोड़े मारो। अतः उस लड़के ने गवर्नर के लड़के को कोड़े मारे। जब कोड़ा रखने लगा तो ख़लीफ़ा ने कहा कि दो कोड़े गवर्नर साहब को भी मारो, क्योंकि उनके लड़के को अगर यह घमंड न होता कि उसका बाप गवर्नर है तो तुम्हें कोड़े कदापि न मारता, परन्तु ग़ैरमुसलिम लड़के ने यह कहते हुए कोड़ा रख दिया कि जिसने मुझे मारा था मैंने उससे बदला ले लिया, मेरा दिल ठंडा हो गया, मैं गवर्नर साहब को क्यों मारूँ।

मिस्र की एक ग़ैरमुसलिम बुढ़िया ने ख़लीफ़ा हज़रत उमर से शिकायत की कि आप के गवर्नर अबुल आस ने मेरी आज्ञा के बग़ैर मेरा मकान गिराकर मसजिद में सम्मिलित कर लिया है। गवर्नर बुलाए गए। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि शिकायत सही है। मसजिद तंग पड़ती है। किसी तरफ़ बढ़ने की गुंजाइश नहीं है, इसके मकान ही की तरफ़ बढ़ने की गुंजाइश है। बुढ़िया को उसके मकान की दुगुनी क़ीमत दी जा रही है, परन्तु उसने लेने से इनकार कर दिया। हमारे सामने भी मजबूरी थी। अतः हमने उसका मकान गिराकर उसपर मसजिद बना दी और उसके मकान की दुगुनी रक़म बैतुलमाल में जमा है। इस पर ख़लीफ़ा बड़े ग़ज़बनाक हुए और हुक्म दिया कि बुढ़िया का मकान वहीं बनाया जाए जहाँ पहले था।

इस प्रकार बहुत से वाक़ियात ऐसे हुए जिनसे मालूम होता है कि ग़ैर मुसलिम जनता भी इस्लामी हुकूमत से बहुत ख़ुश थी। यह सारी बातें इतिहास के पन्नों में आज भी सुरक्षित हैं, जिन्हें पढ़कर आज के बुद्धिजीवी भी बोल उठे—

- नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा, ''मुझे आशा है कि वह समय दूर नहीं जब मैं इस योग्य हो जाऊँगा कि संसार के सारे देशों के शिक्षित और योग्य लोगों को एकत्रित कर दूँ और उनकी सहायता से क़ुरआन की बुनियाद पर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित कर दूँ जो सत्य है और मानवता को सफलता के मार्ग पर ले जा सकती है।''
- बर्नाड शॉ ने कहा, ''आनेवाले सौ वर्षों में हमारी दुनिया का मज़हब इस्लाम होगा, मगर आज के मुसलमानों का इस्लाम नहीं, बल्कि वह इस्लाम जो मानव बुद्धि में

रचा-बसा है।''

● रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा, ''वह समय दूर नहीं जब इस्लाम अपनी ऐसी सच्चाई जो ठुकराई न जा सके, रूहानियत द्वारा सब पर विजय पा लेगा और हिन्दू मज़हब पर भी विजयी हो जायेगा, तो हिन्दुस्तान में एक ही मज़हब होगा और वह इस्लाम मज़हब होगा।''

● महात्मा गाँधी ने कहा, ''जब हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो जाएगा तो हम यहाँ भी वैसा ही शासन स्थापित करेंगे जैसा अबूबक्र ने स्थापित किया था।''

● जय प्रकाश नारायण ने पटना मेडिकल कॉलेज में सीरत पर भाषण देते हुए कहा, ''यदि आज दुनिया के मुसलमान ग़फ़लत के पर्दे चाक करके मैदान में आ जाएँ और इस्लामी सिद्धान्तों पर काम करें तो सारी दुनिया का मज़हब इस्लाम हो सकता है।''

अन्तिम ईशग्रन्थ का वैज्ञानिक सबूत

आज पूरी दुनिया ईश्वर को मान रही है। परन्तु उसके पास ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है। कुरआन मजीद को दुनिया ईशग्रन्थ मानने को तैयार नहीं है। यदि हम दुनिया को विश्वास दिला दें कि कुरआन उसी ईश्वर का ग्रन्थ है जिसको हम सब अपना ईश्वर मानते हैं तो उसके सारे दुख तथा उसकी दरिद्रता दूर हो जाएगी और एक ही माँ-बाप की सन्तान एक बार फिर गले मिल जाएगी।

हमारे पूर्वजों को पूर्ण विश्वास था कि अन्तिम ईशग्रन्थ (कुरआन मजीद) को दुनिया ईशग्रन्थ मान ले तो संकट के बादल छँट सकते हैं। अतः उन्होंने कुरआन मजीद को ईशग्रन्थ साबित करने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। जैसे–

1. उन्होंने कहा कि अरब में शेर व शायरी का बड़ा रिवाज था। यदि किसी की कविता बहुत अच्छी हो जाती तो उस कविता को रेशम के कपड़े पर सोने के धागे से लिखकर काबे के अन्दर टाँग दिया जाता। यह वहाँ का सबसे बड़ा पुरस्कार था। अब तक ऐसे सात व्यक्तियों को यह पुरस्कार मिल चुका था। इन्हीं सातों में से एक कवि 'लबीद' भी था, जो उस वक़्त जीवित था। एक दिन 'लबीद' ने अपनी एक ताज़ा कविता काग़ज़ पर लिखकर काबा के दरवाज़े पर टाँग दी। एक मुसलमान ने कुरआन की एक छोटी-सी सूरा 'अल-कौसर', जिसमें केवल तीन ही आयतें हैं एक काग़ज़ पर लिखकर लबीद के काग़ज़ के बगल में टाँग दी। दूसरे दिन जब लबीद काबा में आया तो देखा कि उसके काग़ज़ के बग़ल में एक काग़ज़ और लटक रहा है। वह लपक कर गया और उसको पढ़ा और उसमें अपनी ओर से एक आयत और जोड़ दी "यह मानव की वाणी है ही नहीं"। हमारे पूर्वजों ने यह सोचा होगा कि दुनिया 'लबीद' का यह रिमार्क पढ़कर मान जाएगी कि कुरआन ईशग्रन्थ है।

2. विलास्टन ने एक किताब लिखी है, जिसमें एक बस्ती का हाल लिखा है। वहाँ के नौजवान कुरआन पढ़कर मुसलमान हो जाते। वहाँ के बूढ़े इस बात पर बड़े ही चिन्तित थे। एक दिन सब बूढ़े सिर जोड़कर बैठे कि अगर इसी प्रकार हमारा नौजवान मुसलमान होता गया तो हमारा मज़हब तो ख़त्म हो जाएगा। हमें इसके लिए कुछ करना चाहिए। अन्त में यह तय हुआ कि कुरआन की टक्कर की एक पुस्तक हम भी तैयार करें तो नौजवानों के मुसलमान बनने में रुकावट हो सकती है। परन्तु यह प्रश्न उठा कि ऐसी पुस्तक कौन लिख सकता है। बस्ती में एक व्यक्ति था 'इबनुल मुख़फ़्फ़ा'। वह एक बहुत

अच्छा कवि भी था और उच्च कोटि का साहित्यकार भी। तय हुआ कि वही ऐसी पुस्तक लिख सकता है। बूढ़ों का यह प्रतिनिधिमण्डल इबनुल मुख़फ़्फ़ा के पास गया और उससे ऐसी किताब लिखने की प्रार्थना की। इबनुल मुख़फ़्फ़ा को भी अपने ऊपर बड़ा गर्व था। अतः वह इस काम के लिए दो शर्तों के साथ तैयार हो गया। पहली यह कि काम कठिन है, समय चाहता है। अतः एक साल का समय दिया जाए। दूसरी शर्त यह कि यह कार्य एकान्त चाहता है। उसकी दोनों शर्तें मान ली गईं और बस्ती के बाहर एक ख़ेमा लगा दिया गया। वहाँ प्रतिदिन आवश्यक सामग्री पहुँचा दी जाती और वह काम करने के लिए ख़ेमे में बैठ गया। छह महीनों के बाद बूढ़ों ने सोचा कि चलो देखें कितना काम हुआ। जब ख़ेमे के पास पहुंचे तो क्या देखते हैं कि इबनुल मुख़फ़्फ़ा किसी सोच में बैठे हैं। उसके पश्चात काग़ज़ का एक टुकड़ा उठाया और उस पर कुछ लिखा। थोड़ी देर तक उसको पढ़ते रहे। फिर काग़ज़ को फाड़कर फेंक दिया। फिर सोच में बैठ गए और एक काग़ज़ पर कुछ लिखा और उसको भी देर तक पढ़ते रहे और फिर उसको भी फाड़कर फेंक दिया। जब बहुत देर हो गई तो बूढ़े लोग ख़ेमे में दाख़िल हुए। क्या देखते हैं कि इबनुल मुख़फ़्फ़ा के एक ओर फटे हुए काग़ज़ों का ढेर लगा हुआ है और वह बोल उठा कि जब मैं बड़े सोच-विचार के बाद एक वाक्य लिखता हूँ और उसकी क़ुरआन से तुलना करता हूँ तो मेरा वाक्य क़ुरआन के वाक्य की धूल को भी नहीं पहुँचता, अब तक पहला वाक्य नहीं बना पाया।

पूर्वजों ने यह वाक़या भी इसीलिए लिखा है कि इबनुल मुख़फ़्फ़ा की बेबसी देखकर दुनिया मान जाएगी कि क़ुरआन ईशग्रन्थ है।

3. मिस्र में अरबी के बहुत बड़े पंडित 'कामिल गीलानी' थे। उनका अरबी साहित्य में बड़ा ऊँचा स्थान था। उनके एक मित्र डॉक्टर फिंगल अमरीका में रहते थे। उनका भी अरबी साहित्य में बड़ा ऊँचा स्थान था। यही अरबी दोनों की मित्रता का कारण थी। वरना गीलानी पक्का मुसलमान था और डॉक्टर फिंगल इस्लाम दुश्मन। एक बार गीलानी को अमरीका जाना हुआ तो अपने मित्र डॉ० फिंगल के यहाँ ठहरे। एक दिन डॉक्टर फिंगल ने अपने मित्र से कहा कि क्या तुम अब भी क़ुरआन को ईशग्रन्थ मानते हो और यह कहकर हँसे। वे समझते थे कि गीलानी के पास इसका कोई उत्तर नहीं, परन्तु गीलानी बड़ी गंभीरता से बोले कि यह तय करना कि क़ुरआन ईशग्रन्थ है कि नहीं, इस प्रकार तय नहीं हो सकता। हम लोग भी एक विषय लें और उसपर अरबी का अच्छे अच्छा वाक्य बनाएँ और फिर उसकी तुलना क़ुरआन से करें। डॉक्टर फिंगल ने भी इसी को पसंद किया। तय हुआ कि जहन्नम के विषय पर वाक्य बनाए जाएँ। दोनों क़लम और काग़ज़ लेकर बैठ गए और जब दस बारह वाक्य बन चुके तो डॉक्टर फिंगल ने कहा कि अब इससे अच्छा वाक्य

क्या बनेगा। इस पर.गीलानी ने मुस्कुराते हुए डॉक्टर फिंगल की तरफ़ देखा। डॉक्टर ने पूछा कि क्या कुरआन में जहन्नम के विषय पर इससे अच्छा वाक्य है? गीलानी ने जवाब दिया कि अच्छा ही नहीं, हमारे वाक्य उसकी धूल को भी नहीं पा सकते। यह कहते हुए गीलानी ने कुरआन की यह आयत पढ़ी—

''वह दिन जबकि हम 'जहन्नम' से पूछेंगे कि क्या तू भर गई और वह कहेगी क्या कुछ और है?''

डॉक्टर फिंगल का मुँह खुला का खुला रह गया और बोल उठे कि गीलानी मेरी गवाही लिख लो कि कुरआन ईशग्रन्थ है।

हमारे बुज़ुर्गों ने इस वाक़िए का ज़िक्र इसी लिए किया होगा कि जब डॉक्टर फिंगल जैसे विद्वान यह कहने पर मजबूर हो गए तो पूरी दुनिया मान लेगी कि कुरआन ईशग्रन्थ है।

4. अल्लामा मशरक़ी पंजाब के बहुत बड़े आलिम थे। रूस, अमरीका और इंग्लैंड आदि देशों का भ्रमण कर चुके थे। वे लिखते हैं कि एक दिन मैं लन्दन में एक जगह बैठा था। इतवार का दिन था, सुबह का समय था। आसमान पर बादल छाए हुए थे और मामूली बूँदा-बाँदी भी हो रही थी। क्या देखता हूँ कि समय का सबसे बड़ा वैज्ञानिक और धार्मिक सर जेम्स जेक्स बग़ल में छतरी और हाथ में बाइबिल लिए हुए जा रहा है। दौडकर उसके सामने गए और सलाम किया। उसने पूछा, ''क्या चाहते हो?'' अल्लामा ने कहा ''आपसे दो प्रश्न करना चाहता हूँ। एक यह कि बूँदा-बाँदी हो रही है और आप छतरी बग़ल में लिए हैं।'' यह सुनकर अपनी बदहवासी पर मुस्कुराया और छतरी तान ली, और पूछा, ''दूसरा प्रश्न क्या है?'' अल्लामा ने कहा, ''आप गिरजा क्यों जा रहे हैं?'' इस पर वह थोड़ी देर ख़ामोश खड़ा रहा और बोला, ''आज शाम की चाय मेरे साथ पियो'' और चल दिया। शाम 4 बजे जब अल्लामा जेम्स के घर पहुँचे तो जेम्स की पत्नी ने उनका स्वागत किया और चाय की मेज़ पर लाकर उनको बिठाया और जेम्स वहाँ पहले से उपस्थित थे। चाय की मेज़ पर बैठते ही जेम्स ने अपनी बात शुरू की। कहा कि जब मैं गिरजाघर में ईश्वर के आगे अपना सिर झुकाता हूँ, तो मुझे बड़ी शान्ति मिलती है। यह अल्लामा के प्रश्न का उत्तर था। इसके बाद बहुत से विषयों पर बात होती रही। जेम्स अरबी का अच्छा विद्वान था। अल्लामा ने उसको कुरआन की कुछ आयतें सुनाईं। उन्हीं में एक आयत यह भी थी—

''वास्तविकता यह है कि अल्लाह के बंदों में से केवल ज्ञानवाले लोग ही उससे डरते हैं।'' (कुरआन, 35:28)

यह सुनते ही जेम्स चौंका और कहा कि यह तो तुमने बहुत बड़ी बात कह दी। इसपर तो मैं पचास वर्ष से मनन कर रहा हूँ, परन्तु यह बात मेरी समझ में नहीं आई थी। क्या यह कुरआन में है? अल्लामा ने कहा कि 'हाँ'। इस पर जेम्स बोल उठा "मशरक़ी मेरी गवाही लिख लो कि कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तो पढ़े-लिखे थे ही नहीं, निश्चय ही यह सत्य उन्हें ईश्वर ने बतलाया।"

इन सारे ही वाक़ियात में कुरआन के उच्च साहित्यक गुणों का वर्णन किया गया है, ताकि लोग उससे प्रभावित होकर कुरआन को ईश्वरीय ग्रन्थ मान लें।

सन् 1919 ई० में मैंने आज़मगढ़ के एक प्रसिद्ध विद्यालय (मदरसतुल-इसलाह) में दाखिला लिया। उस समय वहाँ अरबी का चार साल का कोर्स था। यह कोर्स पूरा करने के पश्चात मैंने क्वींस कॉलेज बनारस से इंटर पास किया और मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ से बी.एस.सी. और एम.एस.सी. और बी.टी. की डिग्रियां प्राप्त कीं और मुझे इसमें लगभग तेरह-चौदह साल लग गये। इस लम्बे समय में मुझे अरबी की पुस्तकों को हाथ लगाने का अवसर ही प्राप्त नहीं हो सका और जो कुछ अरबी पढ़ी थी, भूल-भाल गया। फिर भी कुछ न कुछ अरबी तो जानता ही हूँ। जब मैं अपने पूर्वजों के वाक़ियात से बिलकुल ही प्रभावित न हुआ, तो भला वे लोग कैसे प्रभावित हो सकते थे जिन्होंने अरबी पढ़ी ही नहीं। इसलिए मैंने सोचा कि कुछ दूसरा ही उपाय अपनाया जाए कि लोग इस सत्य को मान लें कि कुरआन ईशग्रन्थ है। मैंने कुरआन में देखा कि कुछ ऐसी बातों का वर्णन है जिसको मानव अब तक नहीं जानता था, तो यह प्रश्न पैदा हुआ कि पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व कुरआन ने उनका स्पष्ट वर्णन कैसे कर दिया। जो लोग पढ़े-लिखे हैं वे इस बात को जानते हैं कि ईश्वर को हर चीज़ का ज्ञान है। इसलिए कुरआन का यह वर्णन ईश्वरीय है। इस सत्य के आगे सारे लोग घुटने टेक देंगे और उनको मानना पड़ेगा कि कुरआन ईशग्रन्थ है। इस दृष्टिकोण से जब मैंने कुरआन का अध्ययन किया तो ऐसी बहुत सी बातें मिल गईं जिन्हें आज से पहले मानव नहीं जानता था, परन्तु कुरआन में पन्द्रह सौ वर्ष पहले इसका स्पष्ट वर्णन है। जैसे–

खारा-मीठा पानी

सोलहवीं शताब्दी की बात है कि तुर्की साम्राज्य की जल-सेना का कमांडर अपनी सेना को लिए हुए फ़ारस की खड़ी में ठहरा हुआ था। फ़ारस की खाड़ी का पानी खारा है। सेना के पास पीने के पानी का भंडार था। परन्तु धीरे-धीरे घट रहा था। अतः जल सेना के कमांडर अली रईस को चिन्ता हुई कि यदि स्टोर का पानी समाप्त हो गया तो सिपाहियों को पीने का पानी कहाँ से मिलेगा। उसने मीठे पानी की बहुत खोज की, परन्तु कहीं नहीं

मिला। फ़ारस के चारों ओर मरुस्थल है। एक दिन एक सैनिक ने समुद्र का पानी मुँह में डाला तो चिल्लाया कि पानी तो मीठा है। इस पर अन्य सैनिकों ने कहा कि तुम पागल हो गए हो, समुद्र का पानी कहीं मीठा होता है। परन्तु एक दूसरे सैनिक ने समुद्र का पानी पीकर कहा कि वास्तव में यह मीठा है। इस पर अन्य सैनिक भी वहाँ पहुँच गए और पानी को चखा तो ज्ञात हुआ कि समुद्र में थोड़ी दूर का पानी मीठा है और बाक़ी चारों ओर खारा पानी है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि समुद्र के खारे पानी के बीच में मीठे पानी का भंडार है। इस आश्चर्यजनक बात की ख़बर देनेवाला पहला व्यक्ति अली रईस था। इसके पूर्व किसी को भी यह जानकारी नहीं थी कि समुद्र के खारे पानी के बीच में मीठे पानी का भी भंडार होता है, परन्तु वह आपस में मिलते नहीं। अमरीकन कम्पनी जब तेल निकालने की खोज में वहाँ गई तो उसे भी इसी मीठे पानी के भंडार से काम लेना पड़ा। उसने वहाँ पर एक जहाज़ खड़ा कर दिया और पम्प द्वारा मीठा पानी तट पर पहुँचा दिया। इससे पहले दुनिया में किसी व्यक्ति को इस आश्चर्यजनक बात की खबर न थी। परन्तु क़ुरआन मजीद ने पन्द्रह सौ वर्ष पहले कह दिया था—

''दोनों समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएँ, फिर भी उनके बीच एक परदा बाधक है, जिसे वे पार नहीं करते हैं।'' (क़ुरआन, 55 :19-20)

''और वही है जिसने दो समुद्रों को मिला रखा है। एक स्वादिष्ट और मीठा, दूसरा कड़ुवा और खारा। और दोनों के बीच एक आवरण है, एक रुकावट है, जो गड्डमड्ड होने से रोके हुए है।' (क़ुरआन, 25:53)

यह प्रश्न उठता है कि जब अली रईस से पहले दुनिया में किसी व्यक्ति को भी इस आश्चर्यजनक बात की ख़बर नहीं थी तो इस क़ुरआन ने पन्द्रह सौ वर्ष पहले इसका वर्णन कैसे कर दिया। एक पढ़ा-लिखा मनुष्य भली-भाँति इस बात को जानता है कि ईश्वर को हर चीज़ का पूर्ण ज्ञान है। अतः यह किताब (क़ुरआन मजीद) ईशग्रन्थ है।

जब लोगों को यह मालूम हो गया कि फ़ारस की खाड़ी में मीठे पानी और खारे पानी के भंडार पास-पास पाए जाते हैं तो अन्य समुद्रों में खोज आरम्भ हुई कि कहाँ-कहाँ समुद्र में मीठे पानी और खारे पानी के भंडार पाए जाते हैं, तो पता लगा कि बहुत-से स्थानों पर इस प्रकार के मीठे और खारे पानी के भंडार पास-पास मिलते हैं, जैसे लंका के उत्तरी समुद्र में और जापान के तटीय स्थानों में मीठे और खारे पानी के भंडार पास-पास पाए जाते हैं। प्राचीनकाल से फ़ारस की खाड़ी में ऐसे सीप निकाले जाते रहे हैं जिनमें मोती और मूँगे मिलते हैं और ये सीप उन्हीं स्थानों पर पाए जाते हैं जहाँ मीठे और खारे पानी के भंडार पास-पास होते हैं। इस जानकारी के पश्चात लंका के उत्तरी समुद्र और जापान

के तटीय क्षेत्र और अन्य दूसरे स्थानों पर जहाँ, मीठे और खारे पानी के भंडार साथ-साथ हैं, मोती और मूँगे वाले सीप मिलते हैं। यह जानकारी लोगों को अली रईस की आश्चर्यजनक खोज के बाद ही हुई। परन्तु क़ुरआन में पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व यह ख़बर दे दी थी कि मोती और मूँगे वाले सीप केवल उन्हीं स्थानों में पाए जाते हैं जहाँ खारे और मीठे पानी के भंडार पास-पास होते हैं–

''इन समुद्रों (खारे और मीठे पानी के भंडार) से मोती और मूँगे निकालते हैं।''

(क़ुरआन 55:22)

यहाँ भी वही प्रश्न उठता है कि जब अली रईस की आश्चर्यजनक ख़बर से पहले कोई नहीं जानता था कि कैसे समुद्रों में ऐसे सीप पाए जाते हैं जिनसे मोती और मूँगा निकलता है तो क़ुरआन ने पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व यह ख़बर कैसे दे दी। मानना पड़ेगा कि क़ुरआन ईशग्रन्थ है क्योंकि ईश्वर ही को हर चीज़ का ज्ञान है।

अपकेंद्री बल

जब कोई वस्तु एक गोलाई में घूमती है तो उसके प्रत्येक कण में एक बल उत्पन्न हो जाता है जो उसको केंद्र से दूर फेंकता है। इस बल को अपकेंद्री बल (Contrifugal Force) कहते हैं। जब कुम्हार की चाक पर थोड़ी-सी मिट्टी रख दी जाए और चाक को तेज़ी से घुमाया जाए तो मिट्टी दूर जा गिरती है। यह अपकेंद्री बल है जो उसको दूर फेंक देता है। जब हम एक पत्थर के टुकड़े में धागा बाँध कर एक गोलाई में घुमाते हैं तो एक गोलाई में घूमने के कारण उसमें अपकेंद्री बल पैदा हो जाता है और जब इस बल में वृद्धि होती है तो पत्थर धागा तोड़कर दूर जा गिरता है। इस प्रकार जब भी कोई वस्तु एक गोलाई में घूमती है तो उसमें से अपकेंद्री बल अवश्य पैदा होता है। परन्तु हमारी पृथ्वी जिसपर हम आप चल-फिर रहे हैं, एक हज़ार मील प्रति घंटा के हिसाब से अपनी धुरी पर नाच रही है और सूर्य के चारों ओर 66600 मील प्रति घंटा के हिसाब से भ्रमण कर रही है, परन्तु कोई अपकेंद्री बल उत्पन्न नहीं होता। वैज्ञानिक बहुत परेशान थे। कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था। जब मैं अलीगढ़ यूनिवर्सिटी में एम.एस.सी. का इम्तिहान दे रहा था, वहाँ मौखिक परीक्षा में इसी विषय का सामना हुआ। मौखिक परीक्षा का परीक्षक (Examiner) रंगून यूनिवर्सिटी से आनेवाला था। कई रोज़ से हम लोग उसके आने का इन्तिज़ार कर रहे थे। एक दिन वह आ ही गया। मैंने अपने हेड से कहा कि मैं कई रोज़ से यहीं पड़ा हूँ, परीक्षा में मुझे पहले नम्बर पर रख दीजिए तो मुझे छुट्टी मिल जाएगी और मैं 12 बजे वाली गाड़ी से गोंडा चला जाऊँगा। हेड ने कहा, यहीं रहो, पहला नाम तुम्हारा ही पुकार देंगे। तब परीक्षक परीक्षा कक्ष में बैठा और मेरा नाम पुकारा गया

तो जैसे ही मैं अन्दर गया और कुर्सी पर बैठा ही था कि परीक्षक ने अपनी जेब से एक परचा निकाला और उसको पढ़कर मुझ से पूछा कि पिछले साल जर्मनी से फ़लाँ किताब छपी है, क्या तुमने उस किताब को पढ़ा है? मैंने कहा, ''नहीं, मैंने तो अब तक उसका नाम भी नहीं सुना है।'' इसपर उसके चेहरे पर कुछ क्रोध ज़ाहिर हुआ। फिर उसने दूसरी जेब से एक काग़ज़ निकाला और उसको पढ़कर पूछा, ''इस साल फ्रांस से एक किताब छपी है, जिसका नाम यह है, क्या तुमने उसको पढ़ा है?'' मैंने कहा कि नहीं। इसपर क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया और कहा कि अच्छा जाओ। अब कहाँ गोंडा जाना। मैं तो कमरे में चादर ओढ़कर लेट गया कि मैं फेल हो गया, मेरा एक साल ख़राब हुआ। जब परीक्षा समाप्त हुई और परीक्षक महोदय चले गए तो मैं शाम को हेड साहब के बंगले पर गया और कहा कि मैं तो फेल हो गया। हेड साहब ने जवाब दिया कि तुम फेल नहीं हुए हो, तुमको 20 नम्बर दे दिए गए हैं और 20 नम्बर पानेवाला फेल नहीं माना जाता। पास होने के लिए 44% नम्बर आवश्यक हैं। अगर अन्य पेपरों में अच्छे नम्बर होंगे तो पास हो जाओगे। मैंने हेड साहब से कहा कि आख़िर वह मुझसे पूछना क्या चाहता था। उन्होंने कहा कि पिछले साल जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने बतलाया कि हमारी पृथ्वी पर अपकेंद्री बल न बनने का कारण पृथ्वी पर पहाड़ों की स्थिति है, जैसे हिमालय, आल्पस, रॉकी, इन्डीज आदि। इस क़ुरआन ने पन्द्रह सौ साल पूर्व ही इसका कारण बता दिया था—

''और हमने धरती में पहाड़ जमा दिए ताकि वह इन्हें लेकर ढुलक न जाए।''

(क़ुरआन 21:31)

पृथ्वी पर अपकेंद्री बल न बनने के कारण का पता लगाना हमारे अपने समय की बात है जब कि क़ुरआन मजीद ने स्पष्ट रूप से यह कारण पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व ही बता दिया था। उस वक़्त ईश्वर के अतिरिक्त यह कारण कोई नहीं जानता था। अतः यह मानना पड़ेगा कि क़ुरआन मजीद ईशग्रन्थ है।

सौर-मंडल

जब मानव ने विज्ञान में उन्नति नहीं की थी तो उसके अनुभव का आधार केवल उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ थीं और उसी के दिए हुए ज्ञान को सत्य समझता था। उसने अपनी आँखों द्वारा देखा कि प्रतिदिन सुबह को सूर्य पूरब से निकलता है और शाम को पश्चिम में डूब जाता है। उसने यही समझा की सूर्य पृथ्वी का भ्रमण कर रहा है और यह बात इतनी मशहूर हुई कि ईसाइयों ने अपनी धार्मिक पुस्तकों में लिख रखा था कि सूर्य पृथ्वी का भ्रमण करता है। गैलेलियो पहला वैज्ञानिक था, जिसने यह सिद्ध किया कि सूर्य पृथ्वी का भ्रमण नहीं करता बल्कि पृथ्वी सूर्य का भ्रमण करती है। सूर्य स्थिर है। पृथ्वी और सूर्य के

अन्य ग्रह सूर्य का भ्रमण करते हैं। इसपर ईसाई दुनिया इतना नाराज़ हुई कि गैलेलियो को फाँसी दे दी। यद्यपि गैलेलियो को फाँसी दे दी गई, फिर भी पढ़ी-लिखी दुनिया यह मान रही है कि सूर्य स्थिर है, पृथ्वी और सूर्य के अन्य ग्रह सूर्य का भ्रमण कर रहे हैं। आज तक यही माना जाता रहा है, परन्तु अब यह सिद्ध हो गया है कि सूर्य भी अपने ग्रहों को लिए हुए एक निर्धारित स्थान की ओर बीस किलोमीटर प्रति सेकेण्ड के हिसाब से जा रहा है। यह जगह उसके प्रभु ने उसके लिए निर्धारित कर दी है। क़ुरआन में पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व यही बात कही गई थी कि सूर्य अपने ग्रहों को लिए हुए एक निर्धारित स्थान की ओर जा रहा है–

> ''और सूर्य, वह अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ सत्ता का बाँधा हुआ हिसाब है।'' (क़ुरआन, 36:38)

गैलेलियो से पहले पूरी दुनिया यही मान रही थी कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसका भ्रमण कर रहा है और बहुत से अज्ञानी आज भी यही मान रहे हैं कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसका भ्रमण कर रहा है। वे आज भी यही कहते हैं कि सूर्य निकला, सूर्य यहाँ पहुँच गया, सूर्य वहाँ पहुँच गया और सूर्य डूब गया, अर्थात् सूर्य ही भ्रमण कर रहा है। परन्तु पढ़ी-लिखी दुनिया इस भ्रम में नहीं है। वह मानती है कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी और सूर्य के अन्य ग्रह सूर्य का भ्रमण कर रहे हैं। परन्तु यह नया सिद्धान्त कि सूर्य भी अपने ग्रहों को लिए हुए निर्धारित स्थान की ओर जा रहा है, एक बिलकुल ही नया सिद्धान्त है। पढ़ी-लिखी दुनिया के अतिरिक्त इसको कोई जानता भी नहीं। परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इस नये सिद्धान्त की ओर आज से पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व क़ुरआन ने स्पष्ट इशारा किया है। क्या अब भी कोई व्यक्ति कह सकता है क़ुरआन मजीद ईशग्रन्थ नहीं है।

ग्यारह ग्रह

आज मानव ने बड़ी उन्नति कर ली है। सूर्य के ग्रहों पर अपकेंद्री बल (Centrifugal Force) और अभिकेंद्री बल (Centripital Force) को भी नाप रहा है, परन्तु इन ग्रहों पर अपकेंद्री बल और अभिकेंद्री बल में अन्तर मिला, जबकि दोनों को एक होना चाहिए। जिससे उसने यही समझा कि अभी कुछ और ग्रह हैं जो हमारे यन्त्रों की पकड़ में नहीं आए हैं। जब उनके बारे में जान जाएँगे तो यह अन्तर भी समाप्त हो जाएगा। अतः वैज्ञानिक लम्बी-लम्बी दूरबीनें लेकर पहाड़ों पर बैठ गए और इन ग्रहों की खोज लगानी शुरू कर दी। बहुत जल्दी नवाँ ग्रह हमारी दूरबीनों की पकड़ में आ गया और इसका नाम रखा गया Pluto (कुबेर)। अब अपकेन्द्री और अभिकेंद्री बल में अन्तर कम रह गया है। परन्तु अन्तर अब भी है। इसका तात्पर्य यह है कि अभी ग्रह और हैं जो हमारे यंत्रों की पकड़

में नहीं आ रहे हैं। वैज्ञानिक खोज में लगे हुए हैं। सितम्बर 1987 में जार्ज कुयेल ने दसवाँ ग्रह का पता लगा ही लिया और इस ग्रह का नाम उसी वैज्ञानिक के नाम पर रखा गया– जार्ज कुयेल्स ऑवजेक्ट (Garge Kuils object)। इस दसवें ग्रह के मिलने के पश्चात भी अपकेंद्री और अभिकेंद्री बलों में अन्तर है। यद्यपि अन्तर बहुत ही थोड़ा है। वैज्ञानिकों का विचार है कि कुल ग्रह ग्यारह हैं, परन्तु ग्यारहवाँ ग्रह इतना छोटा है कि हमारे यंत्रों की पकड़ में नहीं आ रहा है। कितने आश्चर्य की बात है कि वैज्ञानिकों को भी पूर्ण विश्वास है कि ग्रह केवल ग्यारह ही हैं। यद्यपि ग्यारहवाँ ग्रह हमारे यंत्रों की पकड़ में नहीं आया है। परन्तु क़ुरआन ने ऊँची आवाज़ में पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व कह दिया कि ग्रह केवल ग्यारह हैं–

"जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि पिताजी मैं ग्यारह ग्रह देख रहा हूँ।"

(क़ुरआन, 12:4)

हमारे वैज्ञानिकों को पूर्ण विश्वास है कि ग्रह ग्यारह हैं। यद्यपि ग्यारहवाँ ग्रह हमारे यन्त्रों की पकड़ में अभी आया नहीं है। परन्तु क़ुरआन ने पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व ग्रहों की गिनती ग्यारह बताई थी, जब मनुष्य ग्रहों को नहीं जानता था। यह एक पक्का सुबूत है कि क़ुरआन ईश-ग्रन्थ है।

आद की जाति

नूह के तूफ़ान से डूबने से जो लोग बचा लिए गए थे, उनमें सबसे ज़्यादा उन्नति आद की क़ौम ने की। जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है–

"भूल न जाओ कि तुम्हारे प्रभु ने नूह की जातिवालों के पश्चात तुमको उनका उत्तराधिकारी बनाया और तुम्हें ख़ूब हृष्ट-पुष्ट किया। अतः अल्लाह के चमत्कारों को याद रखो, आशा है कि सफलता प्राप्त करोगे।"

(क़ुरआन, 7:69)

उन्होंने बिल्डिंग बनाने में सबसे ज़्यादा योग्यता दिखलाई। कहा जाता है कि खम्भों पर बिल्डिंग बनाने की ईजाद सबसे पहले आद क़ौम ने ही की। परन्तु बाद को उनके अन्दर बिगाड़ आया और शिर्क की बीमारी उनके अन्दर फैल गई। हूद उनके सुधार के लिए ईशदूत बनाकर भेजे गए। उन्होंने उन्हें सुधारने की बहुत कोशिश की, लेकिन सब बेकार रही। जैसा कि क़ुरआन ने कहा है—

"यह तुम्हारा क्या हाल है कि प्रत्येक ऊँचे स्थान पर व्यर्थ एक यादगार भवन निर्मित कर डालते हो।" (क़ुरआन, 26:128)

इन लोगों ने हूद की एक न सुनी, जिस कारण इनपर ईश्वर की ओर से अज़ाब आया।

''तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे प्रभु ने क्या व्यवहार किया ऊँचे स्तम्भोंवाले आदे इरम के साथ, जिनके सदृश्य कोई जाति संसार के देशों में पैदा नहीं की गई थी।''

(कुरआन, 89:6-8)

एक दूसरे स्थान पर कुरआन कहता है—

''आद ने झुठलाया तो देख लो कैसी थी मेरी यातना और कैसी थी मेरी चेतावनियाँ। हमने एक निरन्तर अशुभ दिन प्रचण्ड तूफ़ानी हवा भेजी, जो उन्हें उठाकर इस प्रकार फेंक रही थी जैसे वे जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हों। अतः देख लो कैसी थी मेरी यातना और कैसी थीं मेरी चेतावनियाँ।''

(कुरआन 54:18-21)

आद ने पैगम्बर हूद की एक न सुनी, जिस पर ईश्वर ने उनपर अज़ाब भेजा, जैसा कि कुरआन में कहा गया है—

''समूद और आद ने उस अचानक टूट पड़नेवाली आपत्ति को झुठलाया तो समूद एक प्रचण्ड घटना से विनष्ट किए गए। और आद एक बड़ी तेज़ तूफ़ानी आँधी से विनष्ट किए गए। अल्लाह ने उसको निरन्तर सात रात और आठ दिन उन पर लगाए रखा। (तुम वहाँ होते) तो देखते कि वे वहाँ किस प्रकार पछाड़े हुए हैं, जैसे वे खजूर के जीर्ण तने हों। अब क्या उनमें से कोई तुम्हें शेष दिखाई देता है।'' (कुरआन, 69:4-8)

इस प्रकार कुरआन मजीद में आद का वर्णन पचीसियों स्थान पर किया गया है लेकिन जो लोग कुरआन को ईशग्रन्थ नहीं मानते आद के वजूद को मानने से केवल इसलिए इनकार कर दिया कि पृथ्वी के धरातल पर उनका कोई निशान नहीं मिलता।

1992 ई० की बात है कि तेल खोजनेवाली कुछ कम्पनियाँ अहक़ाफ़ के क्षेत्र में पैट्रोल तलाश कर रही थीं। एक क्षेत्र ऐसा लगा कि वहाँ ज़मीन के अन्दर बहुत गहराई में एक बिलडिंग है। उन्होंने खुदाई का काम आरम्भ किया और वास्तव में उनको एक बड़ी शानदार बिलडिंग मिल ही गई, जिसमें आठ खम्भे हैं और हर खम्भा 10 फीट मोटा है और इन खम्भों पर बिलडिंग बनी हुई है और उसके अन्दर जो चीज़ें मिली हैं, वे बड़ी उन्नत और कलापूर्ण हैं।

यह और ऐसी ही बहुत-सी बातें कुरआन में मिलती हैं कि कुरआन को ईशग्रन्थ माने बग़ैर चारा ही नहीं। अगर अब भी कोई व्यक्ति कुरआन को ईशग्रन्थ नहीं मानता तो हठधर्मी और ज़िद के अतिरिक्त इसे और क्या कहा जा सकता है।

मानव-ज्ञान और ईश-ज्ञान

मानव की इन्द्रियों की उड़ान सीमित रहती है। इस सीमा के पार मानव की इन्द्रियों की पहुँच ही नहीं है। अतः बड़े से बड़ा ज्ञानी जो ज्ञान पेश करता है वह अस्थायी होता है। उस समय का मानव उस ज्ञान को बहुत महत्व देता है और समझता है कि यह अटल सत्य है, जो कभी निरस्त नहीं किया जा सकता। परन्तु ज़माने की एक ही करवट कुछ दूसरे ज्ञानी पैदा करती है जो इन ज्ञानों को निरस्त कर देता है और उनकी जगह कुछ दूसरे ज्ञान प्रस्तुत करता है, जिसको उस समय के लोग अटल सत्य मानकर दांतों से पकड़ लेते हैं। लेकिन कुछ समय पश्चात वह ज्ञान भी निरस्त हो जाता है। इस प्रकार यह सिलसिला बराबर चलता रहता है। लेकिन ईश्वर ब्रह्माण्ड के एक-एक भाग का पूर्ण ज्ञान रखता है। अतः जो ज्ञान ईश्वर की ओर से आता है उसको कोई निरस्त नहीं कर सकता। इसी लिए ईश्वरीय ज्ञान सदैव स्थायी होता है। जैसे—

एक समय था कि दुनिया के ज्ञानियों ने कहा कि ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुएँ चार तत्वों (Elements) से मिलकर बनी हैं-

1. आब, (पानी) 2. आतिश (आग), 3. ख़ाक (मिट्टी) और 4. बाद (हवा)।

उनका विचार था कि यह अटल सत्य है जो कभी निरस्त नहीं किया जा सकता। परन्तु ज़माने की एक-ही करवट ने ऐसे ज्ञानी पैदा कर दिए जिन्होंने इन सारे सत्य को असत्य क़रार दे दिया और कहा कि पानी तत्व नहीं है, बल्कि ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का योगिक है। आतिश तो तत्व है ही नहीं। ख़ाक तो बहुत-सी चीज़ों से मिलकर बनी है। इसलिए वह एक मिश्रण है। बाद (हवा) भी बहुत सी गैसों का मिश्रण है। इस प्रकार पिछले ज्ञानियों का ज्ञान निरस्त हो गया।

कुरआन मजीद को आए हुए लगभग पन्द्रह सौ वर्ष हो गए, लेकिन उसका प्रस्तुत किया हुआ ज्ञान आज तक कोई निरस्त न कर सका। यह भी एक बहुत बड़ा सुबूत है कि कुरआन मजीद अन्तिम ईशग्रन्थ है।

अन्तिम ईशग्रन्थ ने दुनिया को क्या दिया?

मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज उसकी आवश्यकता है। अगर समाज संगठित न हो तो मानव एक जंगली जानवर बनकर रह जाए। अतः मानव-समाज को संगठित करने के लिए ईश्वर अपने ईशदूत द्वारा ईशग्रन्थ भेजता रहा है। यही ईशग्रन्थ मानव-समाज का विधान भी रहा है। परन्तु मानव इस विधान को अपनी शरारत से तहरीफ़ करके बिगाड़ता रहा है। इस तरह मानव-विधान और ईशविधान में बराबर संघर्ष भी होता रहा है। अब ईश्वर ने अपना अन्तिम ईशग्रन्थ क़ुरआन मजीद अपने अन्तिम ईशदूत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के द्वारा भेजा और उसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं ले रखी है। यह अन्तिम ईशग्रन्थ मानव-समाज का बेहतरीन विधान भी है।

दुनिया जहाँ यह जानती है कि ईश्वरीय विधान सबसे अच्छा विधान है, वहीं दुनिया यह भी जानती है कि जब तक देश के निवासियों के अन्दर विधान के आदेशों पर चलने की रुचि न पैदा हो जाए तो अच्छे से अच्छा विधान भी दो कौड़ी का हो जाता है। अब दुनिया यह मानने पर मजबूर है कि क़ुरआन मजीद ही वह ग्रन्थ है जो ईश्वरीय भी है और पूर्ण रूप से सुरक्षित भी है।

जहाँ विधान के सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि विधान अच्छा हो, वहीं यह भी आवश्यक है कि देशवासियों के दिल में क़ायदे और क़ानून पर चलने की रुचि भी पैदा हो और इस मक़सद के लिए उन्होंने सदैव मुल्क और वतन की मुहब्बत को ज़रिया बनाया है। उदाहरणत : —

1. द्वितीय विश्व युद्ध में जापान चीन को पराजित करता हुआ भारत की पूर्वी सीमा तक पहुँच गया था, मगर हिन्द सागर में प्रवेश न कर सका, क्योंकि अंग्रेज़ों ने अपने दो मज़बूत लड़ाकू जहाज़ सिंगापुर के पूर्वी समुद्र में खड़े कर दिए थे। दुनिया जानती थी कि बड़े से बड़ा डायनामाइट इस पर असर नहीं कर सकता। क्योंकि उस पर एक फिट मोटी लोहे की चादर लगी हुई थी। इन दोनों जहाज़ों को डुबोने की एक ही विधि हो सकती थी कि एक आदमी अपने शरीर पर भारी बम बाँध कर जहाज़ की चिमनी द्वारा अन्दर घुस जाए और जहाज़ की पैंदी को बम से फाड़ दे। अतः जापान के दो नौजवान इस काम के लिए तैयार हो गए। अपने शरीर पर ताक़तवर बम बाँधकर एक-एक ट्रेलर में बैठ गए और ये

दोनों ट्रेलर एक हवाई जहाज़ में बाँध दिए गए। हवाई जहाज़ सिंगापुर की तरफ़ रवाना हो गया और जब ब्रिटिश लड़ाकू जहाज़ के क़रीब पहुँचा तो दोनों ट्रेलर जहाज़ से अलग कर दिए गए। यह ट्रेलर द्वारा जहाज़ की चिमनी में घुस गए और बम जहाज़ की पैंदी में पटक दिया। दोनों नौजवानों का शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गया, लेकिन ब्रिटिश लड़ाकू जहाज़ की पैंदी भी फट गई और दोनों जहाज मिनटों में डूब गए। यह अपने देश की मुहब्बत में जान देने की बेहतरीन मिसाल है।

2. भारत और पाकिस्तान का युद्ध हो रहा था, जिसमें पाकिस्तान एक क़िस्म का टैंक मैदान में लाया। पाकिस्तान हिन्दुस्तानी फ़ौज पर गोले बरसा रहा था। एक हिन्दुस्तानी सैनिक अब्दुल हमीद ख़ाँ अपने शरीर पर बम बाँधकर और ज़मीन पर रेंगता हुआ पाकिस्तानी टैंक की लाइन में पहुँच गया। टैंक पर चढ़कर ऊपर का दरवाज़ा खोला और अन्दर एक बम मार दिया, जिससे अन्दर मशीन टूट-फूट गई, चालक भी मर गया और टैंक खामोश हो गया। इसी तरह से दूसरे और तीसरे टैंक को खामोश करता हुआ आगे बढ़ा। पाकिस्तानी सैनिकों को आश्चर्य था कि तीनों टैंक खामोश क्यों हो गए, तो क्या देखा कि चौथे टैंक पर एक आदमी ऊपर चढ़ रहा है, उसको उसने गोली मार दी— यह देश की मुहब्बत में जान देने की अच्छी मिसाल है।

3. जिस समय भारत में आज़ादी का संघर्ष हो रहा था, बहुत-से लोगों ने डंडे खाए, जेल गए और देश की स्वतंत्रता के लिए फाँसी के तख़्ते पर चढ़कर जान दे दी। यह भी देश के लिए जान देने की अच्छी मिसाल है। देशभक्तों ने तरह-तरह की तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, लेकिन जब देश आज़ाद हो गया तो देश को दोनों हाथों से लूटने में भी देशभक्त होने का दावा करनेवाले बहुत-से लोग आगे रहे।

इन उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि देश और मुल्क की मुहब्बत बहुत ताक़तवर है। इसके लिए आदमी जान भी दे सकता है। परन्तु इसका प्रभाव दिल और दिमाग़ पर देर तक नहीं रहता। देर-सवेर ग़ायब हो जाता है। इसी लिए अन्तिम ईशग्रन्थ के क़ायदे और क़ानून पर चलने की रुचि पैदा करने के लिए देश और मुल्क की मुहब्बत को माध्यम नहीं बनाया, बल्कि ईश्वर, नरक, और स्वर्ग को माध्यम बनाया।

ईश्वर

आज चन्द नास्तिकों को छोड़कर पूरी दुनिया ईश्वर को मान रही है, लेकिन किसी की भी विचारधारा किसी ईश्वरीय ग्रन्थ पर नहीं है। इसलिए किसी का ईश्वर—

1. ऐसा है जिसको छह दिनों में दुनिया पैदा करके सातवें दिन आराम करने की ज़रूरत पेश आ गई।

2. किसी का ईश्वर रब्बुल आलमीन (संसार का पालनहार) नहीं है, बल्कि रब्बुल ईसराईल (ईसराईल का पालनहार) है, जिसका एक नस्ल के लोगों से ऐसा विशेष रिश्ता है, जो दूसरे इनसानों से नहीं है।

3. किसी का ईश्वर हज़रत याकूब से कुश्ती लड़ता है, लेकिन उसको गिरा नहीं सका।

4. किसी का ईश्वर औज़ेर नामी एक बेटा भी रखता है।

5. किसी का ईश्वर यीशु मसीह नामी एक इकलौते बेटे का बाप है और वह दूसरों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनाने के लिए अपने बेटे को सलीब पर चढ़ा देता है।

6. किसी का ईश्वर बीवी-बच्चे भी रखता है, मगर बेचारे के पास बेटियाँ ही बेटियाँ पैदा होती हैं।

7. किसी का ईश्वर इनसानी रूप धारण करता है। ज़मीन पर इनसानी जिस्म में रहकर इनसानों के से काम करता है।

8. किसी का ईश्वर केवल ''वाजेबुल वजूद'' या ''इल्लतुल इलल'' (First Cause) है। कायनात के निज़ाम को एक मरतबा हरकत देकर अलग जा बैठा और उसके बाद कायनात लगे-बँधे क़ानून के मुताबिक़ खुद चल रही है। इनसान का उससे और उसका इनसान से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार जो लोग ईश्वर को मानते भी हैं वे ख़ुदा को यह नहीं मानते कि ब्रह्माण्ड का वही अकेला ख़ालिक़, मालिक, मुदब्बिर, मुन्तज़िम और हाकिम है। जिसने ब्रह्माण्ड के निज़ाम को केवल बनाया ही नहीं है, बल्कि हर वक़्त वही उसको चला भी रहा है। उसका हुक्म हर वक़्त यहाँ चल रहा है, जो हर ऐब, नुक़्स, कमज़ोरी और ग़लती से पाक है। जिसकी ज़ात, सिफ़ात, इख़्तियारात और इस्तेहक़ाके माबूदियत में कोई इसका साझी नहीं है। जो इस बात से ऊपर है कि कोई उसकी औलाद हो या किसी को अपना बेटा बनाए या किसी को अपना बाप बनाए। वह तो अजन्मा है। किसी क़ौम और नस्ल से उसका ख़ास रिश्ता नहीं हैं।

आज दुनिया के पास क़ुरआन मजीद के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जो ईश्वरीय भी हो और पूर्णतः सुरक्षित भी। आज दुनिया ख़ुद ही कल्पना द्वारा एक ईश्वर बनाती है और ख़ुद ही उसके गुण तय करती है। अब यह बात पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुकी है कि क़ुरआन मजीद अन्तिम ईशग्रन्थ है और पूर्णतः सुरक्षित भी है। इसलिए ईश्वर के बारे में जो कुछ यह किताब कहती है, वही सही है।

अन्तिम ईशग्रन्थ से पहले जितने भी ग्रन्थ ईश्वर की तरफ़ से आए थे वे बिगाड़ का शिकार होकर बेकार हो चुके थे। इसलिए किसी के पास भी ईश्वर के बारे में सही जानकारी का कोई साधन न था। हर एक ने अपनी कल्पना से एक ईश्वर बनाया और स्वयं ही उसके बारे में जानकारी दे दी। इसी लिए इन लोगों के यहाँ ईश्वर के बारे में प्रस्तुत की हुई जानकारी एक-दूसरे से मेल नहीं खाती। अन्तिम ईश-ग्रन्थ के आधार पर जो ईश्वर का परिचय दिया जाए तो लोग यही समझेंगे कि यह भी लेखक के दिमाग़ की पैदावार है। इसलिए अब ईश्वर का जो परिचय इस पुस्तक में दिया जाएगा उसके साथ अन्तिम ईशग्रन्थ की आयतें भी लिख दी जाएँगी, ताकि लोगों के दिमाग़ में कोई ग़लत धारणा पैदा न होने पाए। परन्तु छोटी-सी पुस्तक में पूरी-पूरी आयतों का लिखना असम्भव है। इसलिए यहाँ केवल आयत नम्बर दे दिया जाएगा, ताकि लोग उसको क़ुरआन मजीद से तुलना करके देख लें।

अन्तिम ईशग्रन्थ क़ुरआन मजीद में ईश्वर का क्या परिचय दिया गया है, उसको हम संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे और क़ुरआन मजीद की जिन आयतों के आधार पर जो बात कही गई है उनका आयत नम्बर भी दर्ज किया गया है।

इस्लाम की बुनियाद जिन धारणाओं पर है, उनमें सबसे प्रथम एवं मुख्य धारणा एक ईश्वर पर ईमान है। केवल इस बात पर नहीं कि ईश्वर मौजूद है और केवल इस बात पर भी नहीं कि वह एक है, बल्कि इस बात पर कि वही अकेला इस ब्रह्माण्ड का ख़ालिक़, मालिक, हाकिम और मुदब्बिर है। (सूरा अल-अनआमः आयत 73, अर-रअद : आयत 16, ता०हा०: आयत 4, 8, अल-आराफ़ : 54, अस-सजदा : 5, अल-बक़रा : 101, अल-फ़ुरक़ान : 2)

उसी के क़ायम रखने से यह ब्रह्माण्ड क़ायम है। उसी के चलाने से यह चल रहा है। उसकी हर चीज़ को अपने क़याम और बक़ा के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता है उसका मुहैया करनेवाला वही है। (सूरा फ़ातिर : आयत 3, 41, अल-जासिया : आयत 58, अल-अनआम : आयत 164)।

हाकमियत (Sovereignty) की तमाम सिफ़ात केवल उसी में पाई जाती है और

उनमें ज़र्रा भर भी उसका कोई शरीक नहीं है। (सूरा अल-अनआम : 18, 57, अल-क़हफ़ : 26-27, अल-हदीद : 5, अल-हश्र : 23, अल-मुल्क : 1, यासीन० : 83, अल-फ़त्ह : 11, यूनुस : 107, अल-जिन्न : 22, अल-मोमिनून : 88, अल-बुरूज : 16, अल-माइदा : 1, अर-रअद : 41, अल-अम्बिया : 23, अत-तीन : 8, आले इमरान : 26, 83, 154, अल-आराफ़ : 128)।

समस्त ब्रह्माण्ड को और उसकी एक-एक वस्तु को वह देख रहा है। ब्रह्माण्ड और उसकी हर चीज़ को वह जानता है। न सिर्फ़ उसके वर्तमान को बल्कि भूत और भविष्य को भी। समस्त इल्मे ग़ैब (अप्रत्यक्ष ज्ञान) उसके अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं है। (सूरा अल-मुल्क : 13, 14, 19, अल-कहफ़ : 26, काफ़ : 16, अल-हदीद : 4, अल-नम्ल : 65, सबा : 2-3, अल-अनआम : 59)

वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसके अतिरिक्त सब मरनेवाले हैं और अपनी ज़ात से ख़ुद ज़िन्दा और बाक़ी केवल वही है। (सूरा अल-हदीद : 3, अल-क़सस : 88, अर-रहमान : 27, अल-बक़रा : 255, अल-मोमिन : 65)

वह न किसी की औलाद है और न कोई उसकी औलाद है। उसकी ज़ात के अतिरिक्त दुनिया में जो भी है, वह उसकी मखलूक़ है। दुनिया में किसी की भी हैसियत नहीं है कि उसको किसी माने में भी रब्बे कायनात (Lord of the Universe) का हमजिन्स या उसके बेटा या बेटी कहा जा सके। (सूरा अल-इख़लास : 3-4, अल-बक़रा : 116-117, अल-अनआम : 102, अल-मोमिन : 91, अल-कहफ़ : 4-5, मरयम : 35,88,93)।

वही मानव का वास्तविक माबूद है। किसी को इबादत में उसके साथ शरीक करना सबसे बड़ा पाप और सबसे बड़ी बेवफ़ाई है। वही मानव की दुआएँ सुननेवाला है और क़बूल करने या न करने का अधिकार वही रखता है। उससे दुआ न माँगना बेज़ा ग़ुरूर है। उसके अतिरिक्त किसी और से दुआ माँगना जहालत है और उसके साथ दूसरों से दुआ माँगना ख़ुदाई में ग़ैर ख़ुदा को ख़ुदा के साथ शरीक ठहराना है। (सूरा अल-क़सस : 88, अज़-ज़ुमरः 3, 64, 5, 6, लुकमान : 13, सबा : 22, स्वाद : 65, अल-मोमिन : 60)

इस्लामी दृष्टिकोण से ईश्वर की हाकमियत केवल प्रकृति के अनुरूप ही नहीं है, बल्कि सियासी और क़ानूनी भी है और इस हाकमियत में भी कोई उसका शरीक नहीं है। उसकी ज़मीन पर, उसके पैदा किए हुए बन्दों पर उसके अतिरिक्त किसी को हुक्म चलाने का अधिकार नहीं है, चाहे वह कोई बादशाह हो या बादशाही ख़ानदान हो, शासक वर्ग हो या कोई ऐसा प्रजातंत्र हो जो जनता की सत्ता (Soverengity of people) का क़ायल हो। उसके मुकाबले में जो स्वतंत्र बनता हो वह भी बाग़ी है, जो उसको छोड़कर किसी

दूसरे की इताअत करता हो वह भी बाग़ी है और ऐसा ही बाग़ी वह व्यक्ति या संस्था है जो राजनीतिक और क़ानूनी अधिकार को अपने लिए सुरक्षित करके ख़ुदा की सीमा व अधिकार (Jurisdiction) को व्यक्तिगत क़ानून (Personal Law) या धार्मिक आदेश या उपदेश तक सीमित करता है। वास्तव में अपनी ज़मीन पर पैदा किए हुए इनसानों के लिए शरीअत देनेवाला (Law giver) उसके सिवा न कोई है, न हो सकता है और न किसी को यह हक पहुँचता है कि उसके इक़तिदार (Supreme Authority) को चैलेंज करे। (सूरा अल-फ़ुरक़ान : 42, अत-तौबा : 31, अश-शुअरा : 21, अल-मोमिनून : 116, अन-नास : 1.3, यूसुफ़ : 40, अल-आराफ़ : 3, अल-माइदा : 38, 40, अल-माइदा : 115, अल-बक़रा : 178, 180, 182, 229, 232, अन-निसा : 11, 60, अल-जासिया : 18, अल-माइदा : 44, 45, 47, 50, अन-नह्ल : 116, अन-नूर : 2, आले-इमरान : 64)

इस्लाम के इस 'तसव्वुरे ख़ुदा' के अनुसार चन्द बातें स्वाभाविक रूप से अनिवार्य होती हैं—

1. ख़ुदा ही मानव का अकेला और वास्तविक माबूद है अर्थात इबादत का हक़दार केवल वही है, उसके सिवा किसी और की यह हैसियत ही नहीं है कि मानव उसकी इबादत करे।

2. वही अकेला ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियों का हाकिम है। मानव की दुआओं को पूरा करना या न करना उसके अधिकार में है। इसलिए मानव को उसी से दुआ माँगनी चाहिए। किसी के बारे में यह गुमान तक न करना चाहिए कि उससे भी दुआ माँगी जा सकती है।

3. वही अकेला मानव की क़िस्मत का मालिक है। किसी दूसरे में यह शक्ति नहीं है कि वह मानव की क़िस्मत बना सके या बिगाड़ सके। इसलिए मानव की आशा और डर दोनों का केंन्द्रबिन्दु वास्तव में वही है। उसके अतिरिक्त किसी से न उम्मीद करनी चाहिए और न किसी से डरना चाहिए।

4. मानव और उसके चारों ओर की दुनिया का ख़ालिक़ और मालिक केवल वही है। इसलिए मानव की वास्तविकता और समस्त दुनिया की वास्तविकता का बराहेरास्त और पूर्ण ज्ञान केवल उसी को है और हो सकता है। अतः वही जीवन के टेढ़े-मेढ़े रास्तों में मानव को सही मार्गदर्शन और जीवन का सही क़ानून दे सकता है।

5. फिर चूँकि मानव का ख़ालिक़ और मालिक वही है और वही इस धरती का मालिक है जिसमें मानव रहता है, इसलिए मानव पर किसी दूसरे की हाकमियत या खुद अपनी हाकमियत सरासर कुफ्र है। इसी प्रकार मानव का कानूनसाज़ बनना या किसी और व्यक्ति या व्यक्तियों या संस्थाओं के क़ानून बनाने के अधिकार मानना भी वही हैसियत

रखता है। अपनी ज़मीन पर अपनी पैदा की हुई चीज़ों का हाकिम और क़ानून बनानेवाला केवल वही हो सकता है।

6. सर्वोच्च शासक और वास्तविक मालिक होने की हैसियत से उसका क़ानून वास्तव में सर्वश्रेष्ठ क़ानून (Supreme law) है। मानव के लिए क़ानून बनाने का अधिकार केवल उसी हद तक है जो उस सर्वश्रेष्ठ क़ानून के अन्तर्गत आता है या उससे लिया गया हो या उसके दिए हुए आदेश पर आधारित हो।

अन्तिम ईशग्रन्थ कुरआन मजीद के आधार पर यह है ईश्वर का परिचय। अन्तिम ईशग्रन्थ में ईश्वर का परिचय इतने स्थानों पर दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति कुरआन को समझकर पढ़े तो ईश्वर के विरोध में एक क़दम भी नहीं उठा सकता। जब ईश्वर का परिचय उसके दिल व दिमाग़ में बैठ जाए तो वह कोई काम ईश्वरीय ग्रन्थ के विरोध में कर ही नहीं सकता। इसका उदाहरण एक ऐतिहासिक घटना से प्रस्तुत किया जा रहा है–

सासामी ख़ानदान के एक बादशाह अहमद बिन नसर ने नेशापुर में पहली बार प्रवेश किया। उसने वहाँ एक दरबार लगाया। स्वयं राजगद्दी पर ताज लगाकर बैठा और हुक्म दिया कि जलसे की शुरुआत कुरआन मजीद के पाठ से होगी। यह सुनकर जलसे में से एक बुज़ुर्ग उठे और कुरआन का वह भाग पढ़ा जो परलोक की अदालत के विषय में था। जब वह इस स्थान पर पहुँचे कि ''उस दिन सारी सत्ता ईश्वर के हाथ में होगी, और वह कहेगा, आज सत्ता किसके हाथ में है, आज वास्तव में सत्ता किसके हाथ में है, संसार में बहुत-से लोग बादशाह बने हुए थे, आज कहाँ हैं वे बादशाह? चारों ओर से आवाज़ आएगी- आज सारी सत्ता ईश्वर के हाथ में है।'' यह सुनते ही अहमद बिन नसर काँपने लगा। राजगद्दी (सिंहासन) से उतर गया। ताज अलग रख दिया और सजदे में गिर पड़ा, और रो रोकर कहने लगा, ''हे ईश्वर! बादशाह तू है, मैं नहीं।'' इससे साफ़ ज्ञात होता है कि यदि ईश्वर का सही परिचय दिल और दिमाग़ में उतर गया हो तो ईश्वर का ध्यान आते ही सारी बादशाही समाप्त हो जाती है।

एक वाक़िया है कि एक रईस के यहाँ एक नौजवान लड़की नौकर थी। एक दिन रईस की नियत ख़राब हो गई। लड़की को कमरे में बुलाया और जब वह आई तो कहा कि दरवाज़े को अन्दर से बन्द कर लो। लड़की रईस की नियत को समझ गई। सारे दरवाज़े तो बन्द कर दिए, परन्तु एक दरवाज़े के पास खड़ी हो गई। रईस ने पूछा क्या सब दरवाज़े बन्द हो गए। लड़की ने उत्तर दिया कि हाँ, सब दरवाज़े तो बन्द हो गए परन्तु एक दरवाज़ा तो नहीं बन्द हो रहा है। रईस ने कहा कि आख़िर वह कौन सा दरवाज़ा है जो बन्द नहीं हो रहा है। लड़की बोली कि ''वह दरवाज़ा जिससे ईश्वर हमें और आपको देख रहा है

बन्द नहीं हो रहा है।'' यह सुनते ही रईस को ईश्वर याद आ गया। वह जानता था कि ईश्वर तो यहीं है, जो सब कुछ देख रहा है और सुन रहा है। वह काँपने लगा और लड़की से कहा कि तुम जल्दी से कमरे से बाहर चली जाओ। रईस सजदे में गिर पड़ा और रो-रोकर ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

इससे ज्ञात हुआ कि यदि ईश्वर का सही परिचय दिल व दिमाग़ में रचा-बसा हो तो आदमी हज़ार बिगड़ गया हो, ईश्वर की याद आते ही सारा नशा उतर जाएगा।

नरक

नरक एक ऐसा गड्ढा है जिसमें आग भरी हुई है। वह हमारी आग से हज़ारों गुना गरम है और उसकी तेज़ी में कोई कमी नहीं आती। उसमें साँप और बिच्छू भी तैरते रहते हैं। परन्तु आग उनको नहीं जलाती जो ईशग्रन्थ के आदेशों का पालन करनेवाले होते हैं। इसमें वे लोग झौंक दिए जाएँगे जिन्होंने अन्तिम ईशग्रन्थ के आदेशों का पालन न किया होगा।

जब कोई व्यक्ति आग में डाला जाता है तो उसे बहुत अधिक पीड़ा होती है, परन्तु यह पीड़ा मिनट दो मिनट ही रहती है और आदमी के मरते ही पीड़ा समाप्त हो जाती है। परन्तु, नरक की आग दुनिया की आग से हज़ारों गुना गरम होती है। फिर भी आदमी उसमें मरता नहीं है। यदि वह जल जाता है या उसका गोश्त जल जाता है तो उसी स्थान पर दूसरा माँस लग जाता है। इस प्रकार वह लगातार आग में जलता रहता है और उसकी पीड़ा में कोई कमी नहीं होती।

नरक में बिच्छु भी तैरते रहते हैं परन्तु आग में वह मरते नहीं हैं। यह बिच्छु जब डंक मारता है तो पूरा शरीर फटने लगता है। साँप जब डसता है तो खोपड़ी चटकने लगती है। भूख प्यास से वह तड़पता रहता है। खाने की कोई चीज़ नहीं मिलती। पानी भी इतना गरम होता है कि होंठ गल जाता है और पानी मुँह के अन्दर नहीं जा पाता। इसके अतिरिक्त मारपीट की भी सज़ा मिलती रहती है। यही हाल सदैव बना रहता है, कभी समाप्त नहीं होता। यह है नरक का संक्षिप्त वर्णन— यदि नरक का यह वर्णन दिल व दिमाग़ में बैठ जाए तो कोई व्यक्ति वह काम कर ही नहीं सकता जो परलोक में नरक में झोंकने का ज़रिया बन जाए।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समय में मरुस्थल में एक क़बीला था, जिसका नाम 'ग़ामिदिया' था। वहाँ एक लड़की से व्यभिचार (ज़िना) हो गया। जब उसको होश आया तो वह बहुत डर गई कि व्यभिचार करनेवाले को (परलोक में) नरक में झोंक दिया जाता

है, जहाँ वह सदैव जलता रहता है। परन्तु लड़की यह जानती थी कि व्यभिचार की वह सज़ा जो इस्लाम ने मुक़र्रर की है यदि यहीं भोग ले तो परलोक की सज़ा से वह बच जाएगी। इस्लाम ने व्यभिचार की जो सज़ा तय की है वह कोई हल्की-फुल्की सज़ा नहीं है, बल्कि इसके लिए सख़्त सज़ा निर्धारित है।

लड़की मुहम्मद (सल्ल०) के पास गई और कहा कि उससे व्यभिचार हो गया है और वह गर्भवती हो गई है। उसने कहा कि हमें सज़ा देकर पाक कर दीजिए, ताकि परलोक में नरक में न जाना पड़े। मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि जाओ, जब बच्चा पैदा हो तब आना। वह लड़की अपने क़बीले में लौट गई और नौ महीने के पश्चात जब बच्चा पैदा हो गया तो बच्चे को लिए हुए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास पहुँची और कहा कि अब मुझे सज़ा दीजिए। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि बच्चे को दूध पिलाओ और जब वह दूध छोड़ दे तब आना। वह फिर अपने क़बीले में लौट गई। ढाई वर्ष के बाद जब बच्चे ने दूध छोड़ दिया तो बच्चे को लिए हुए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास पहुँची और कहा कि बच्चे ने दूध छोड़ दिया है, रोटी खाने लगा है, अब मुझे सज़ा दीजिए। अब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने लड़की को उसके अपराध की सज़ा दिलवाई।

कोई यह न समझे कि यह सब कुछ लड़की ने जज़बात में आकर किया है। व्यभिचार करते हुए उसे किसी ने देखा नहीं था। वह पुलिस की हिरासत में भी नहीं थी। फिर भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास गई। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उसे नौ महीने की मुहलत दे दी। अगर जज़बात होते तो वह फिर लौटकर न आती। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फिर ढाई साल की मुहलत दे दी। ढाई साल का समय पूरा होते ही फिर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास गई। यहाँ जज़बात का कोई स्थान नहीं है। जब नरक का पूर्ण ज्ञान हो जाता है तो आदमी उससे बचने के लिए हर जतन करता है, चाहे जान ही क्यों न दे देनी पड़े। इससे ज्ञात हुआ कि नरक का पूर्ण ज्ञान मानव को बुराइयों से बचने के लिए उसे हर क़ीमत पर तैयार कर देता है।

स्वर्ग

जो लोग इस लौकिक जीवन में अन्तिम ईशग्रन्थ के आदेशों का पालन करते हैं, उन्हें परलोक में स्वर्ग में रखा जाता है। स्वर्ग एक मनोरम स्थान है। उसमें बड़े-बड़े शानदार महल बने हैं, जिसमें नौकर सेवा करने के लिए हर समय दौड़ते रहते हैं। उसमें शहद, दूध और मीठे पानी की नहरें बहती हैं। फलों से लदे हुएँ बग़ीचे हैं अर्थात हर प्रकार का आराम है। वहाँ जो इच्छा होती है शीघ्र ही पूरी कर दी जाती है। वहाँ न बीमारी है, न बुढ़ापा और

न मृत्यु यह सदैव का जीवन है।

जब स्वर्ग का सही परिचय दिल व दिमाग़ में बैठ जाता है तो वह कोई ऐसा काम कर ही नहीं सकता जिसके परिणामस्वरूप वह स्वर्ग से वंचित कर दिया जाए। यदि जान की बाज़ी लगाकर स्वर्ग मिल जाए तो सौदा सस्ता है। इसलिए जिसके दिलो दिमाग़ में स्वर्ग का सही नक़्शा है, वह हर वक्त वह काम करने को तैयार रहता है जिसमें परलोक में स्वर्ग मिल जाए, चाहे जान देकर ही मिले। दुश्मनों ने 'उहद' नामक पहाड़ के पास मुसलमानों पर हमला कर दिया और लड़ाई जारी थी और एक सहाबी (रज़ि०) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास खड़े हुए हाथ में कुछ खजूरें लिए खा रहे थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा- ''यदि मैं इस युद्ध में लड़ता हुआ शहीद हो जाऊँ तो क्या स्वर्ग मिल जाएगा?'' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा- ''हाँ''। यह सुनते ही हाथ की खजूरें फेंक दीं और कहा कि मैं इतनी देर नहीं कर सकता कि इतनी खजूरें खाऊँ और उसके बाद तलवार लेकर युद्ध में कूदूँ और लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊँ। मैं इतनी देर नहीं कर सकता, और वह तलवार लेकर युद्ध क्षेत्र में कूद गए और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। स्वर्ग वास्तव में, ऐसा ही स्थान है कि जिसके दिल व दिमाग़ में बैठ जाए, वह ईशग्रन्थ के आदेशों की अवहेलना कर ही नहीं सकता। यदि जान देकर स्वर्ग मिल जाए तो सौदा सस्ता है।

यह है संक्षेप में ईश्वर का परिचय, नरक का परिचय और स्वर्ग का परिचय। इससे मानव के अन्दर इतनी प्रबल रुचि और शक्ति पैदा होती है कि वह इनको प्राप्त करने के लिए जान भी देने को तैयार हो जाता है। लौकिक जीवन का एक-एक सेकेण्ड ईश्वरीय आदेशों के अनुसार व्यतीत करता है और यह प्रभाव उसके दिमाग़ पर जीवनभर छाया रहता है।